SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 8
January-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जनवरी-2022

रु.5/-

नित्याय निरवद्याय सत्यानंद चिदात्मने
सर्वांतरात्मने श्रीमद्वेंकटेशाय मंगलम्

दि. ३०-११-२०२१ से
दि. ०८-१२-२०२१ तक
तिरुचानूर में संपन्न
श्री पद्मावती देवीजी का
ब्रह्मोत्सओं की
दृश्यमालिका।

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-२७)

जब कुन्तिपुत्र अर्जुन ने अपने बंधु बान्धवों को वहाँ देखा तब उसका मन अत्यधिक करुणा से भर गया और फिर गहन शोक के साथ उसने निम्न वचन कहे। (२७वें का उत्तरार्थ और २८वें का पूवार्थ।)

गीतेत्युच्चार संयुक्तो म्रियामाणो गतिं लभेत्।
यद्यत्कर्म च सर्वत्र गीतापाठ प्रकीर्तितम्
तत्तत्कर्म च निर्दोषं भूत्वा पूर्णत्व माप्नुयात्।।

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

''गीता'' शब्द का उच्चारण करते हुए प्राण त्यागनेवाला सद्गति प्राप्त करेगा। गीता का पठन तथा गीता का संकीर्तन करते हुए जो जो कर्म किये जाएँगे वे दोष रहित होकर पूर्ण होंगे।

एस.वी.गोसंरक्षण न्यास

गायों का संरक्षण, उसके द्वारा उपलब्ध आध्यात्मिक महत्ता को ध्यान में रखते हुए सन् १९५६ में ति.ति.दे. ने गोसंरक्षण शाला और सन् २००२ में एस.वी.गोसंरक्षण न्यास को आरंभ किया है। दाताओं से विनती है कि इस न्यास को उदारतापूर्वक धनराशि दान में दें और गोशाला में रहनेवाले गऊओं के पालन-पोषण में अपना सहयोग दें। आयकर कानून के विभाग ८० (जी) के अनुसार आप आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

दाता धनराशि को किसी भी राष्ट्रीय बैंक में 'एग्जिक्यूटिव अफ़सर, टी.टी.डी, तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट या चेक के रूप में भेज सकते हैं।

कृपया मांगड्राफ्ट या चेक इस पते पर भेजें-

द डायरेक्टर, एस.वी.गोसंरक्षण न्यास,
एस.वी.डैयरी फार्म, चन्द्रगिरि रोड,
ति.ति.दे.तिरुपति-५१७५०२.

दूरभाष: ०८७७-२२७७७७७, २२६४५७०.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५२ जनवरी-२०२२ अंक-०८

विषयसूची

मकर संक्रांति	श्रीमती एन.मनोरमा	07
गाय की विशिष्टता	श्री सुधाकर रेड्डी	10
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	15
जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	17
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	20
कौसल्या	डॉ.के.एम.भवानी	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	23
धर्म तथा धर्मग्रंथ और आज का युवा मानस	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालीया	24
महर्षि अगस्त्य	डॉ.जी.सुजाता	31
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	35
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्ना	37
राजस्थान का शिर्ष तीर्थ श्री सूँधामाता	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया	39
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	42
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	47
आयुर्वेद में करेला का महत्व	डॉ.सुमा जोषि	48
नीतिकथा - हरिकथा का महत्व	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
चित्रकथा - सुप्रसिद्ध गायक त्यागराजस्वामी	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	डॉ.एन.दिव्या	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

मुखचित्र - तिरुमल श्री बालाजी।
चौथा कवर पृष्ठ - प्रभु श्रीराम - त्यागराजस्वामी।

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

उत्तरायण पुण्य काल का महापर्व

हमारे हिन्दू संप्रदाय में पूस की माह में अत्यंत धूम-धाम से मनाये जाने वाले तीन दिनों का त्योहार वही है भोगी, संक्रांति और कनुमा। सौरमान या चांद्रमान के रूप में काल गणना करते है। सौरमान के अनुसार सूर्य भगवान एक-एक मास, एक-एक राशी में प्रवेश करते हैं। जब उस राशी में सूर्य प्रवेश करते है तब उस समय का 'संक्रांति' कहते है। वैसे ही हर साल अंग्रेजी कैलेंडर जनवरी महीने में सूर्य भगवान मकर राशी में प्रवेश करते है उस संक्रांति को 'मकर संक्रांति' कहते है। उत्तरायण पुण्यकाल भी इस समय से शुरू होते हैं।

यह त्योहार हिन्दू धर्मावलंबी लोगों को अत्यंत विशिष्ट पर्व दिन है। मकर संक्रांति के पहले दिन को 'भोगी' कहते हैं। भोगी के दिन सुबह पवित्र अग्निकुंड को तैयार करके टंडे पन से गरमी उष्ण ताप को उत्पन्न कराने के लिए घर के सभी लोग इसमें भाग लेकर अपना मनो कामनाओं को पूरन करने के लिए भगवान अग्निदेव के साथ-साथ सूर्य भगवान को स्मरण करके प्रणाम करते है। संक्रांति के अगले दिन 'कनुमा' कहते है। कनुमा त्योहार भी हिन्दू धर्मावलंबी लोगों को विशिष्ट पर्व है। क्योंकी उस दिन सभी किसान लोग अपने-अपने गाय और बछडे को सुन्दरीकरण करके उनको पूजा-पाठ करते हैं।

हिन्दू सांप्रदाय में गाय का विशिष्ट स्थान है। गो माता को आराधन करना एक पवित्र कार्यक्रम जैसा हमारे पूर्वजों ने बता दिया था। गो पूजा, गो आराधन अत्यंत पवित्र कार्यक्रम जैसा हम जान कर लेंगे। गाय के द्वारा ही उपलब्ध 'पंचगव्य' ही होमादि-पूजादि कार्यक्रमों में उपयोग की जाती है। इसलिए गृह प्रवेश के समय में ही गाय और बछडे को पहले घर में प्रवेश की जाती है। गाय में सभी देवी देवताएँ उपस्थित होने के कारण से गो पूजा करना अत्यंत श्रेयोदायक विषय है।

इस विषय को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान भी 'नवतीन सेवा' नामक नूतन सेवा कार्यक्रम को आरंभ किया था। भगवान जी की कृपा से यह सेवा वैभवोपेत ढंग से अत्यंत धूम-धाम से चालू हो रही है। और इनके साथ-साथ कनुमा और श्रीकृष्णाष्टमी के अवसर पर भी ति.ति.दे. गोशाला में गो-पूजा कार्यक्रम अत्यंत धूम-धाम से संपन्न की जाती है। और हाल ही में तिरुपति में संपन्न गो-महा सम्मेलन कार्यक्रम का मुख्य उद्धेश्य भी गो-आधारित प्रकृति विधान में सिंचाई से होनेवाले लाभ को इस समारोह से सभी को अवगत कराया है।

जय गो माता! जय गोविंदा!!

मकर संक्रांति भारत देश का प्रमुख पर्व है। भारत के साथ-साथ अन्य देश में भी होने वाले हिन्दू धर्मावलंबी इस त्योहार को धूम-धाम से मनाया जाता है। पुष्य माह में सूर्य मकर राशी में प्रवेश करना ही मकर संक्रांति है। यह त्योहार जनवरी माह में संभव होता है। सूर्य धनुराशी को छोड कर मकर राशी में प्रवेश होते ही उत्तरायण पुण्य काल भी शुरू होते है। उस प्रकार हर राशी के लिए एक संक्रांति होती है। लेकिन मकर संक्रांति उत्सव प्रसिद्ध है।

इस दिन सूर्य भगवान को आराधन करते हैं। माना जाता है कि इस दिन से देवताओं के दिन शुरू हो जाते हैं। साथ ही, घरों में मांगलिक कार्य भी संपन्न होने आरंभ हो जाते हैं। मकर संक्रांति के मौके पर देश के कुछ प्रांतों में, शहरों में पतंगोत्सव आयोजित किए जाते हैं। वही गुजरात का पतंगोत्सव दुनिया भर में मशहूर है। संक्रांति के दिन यह उत्सव पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस उत्सव को अंग्रेजी में 'काइट फेस्टिवल' कहते हैं। रंग-बिरंग वर्णों का पतंग को विविध आकारों में तैयार करके आकाश में फेहराता है।

इस त्योहार को आन्ध्र, केरला और कर्नाटक में ''संक्रांति'' के नाम से, तमिलनाडु में पोंगल, महाराष्ट्र में ''मकर-संक्रांति'' के नाम से और पंजाब, हरियाणा में लोरी के नाम से पुकारते हैं। आंध्र के चांद्रमान पंचांग के अनुसार यह त्योहार पुष्य माह, अंग्रेजी कैलेंडरों के अनुसार जनवरी के समय मनाते हैं। पंजाब में लोहडी का पर्व मकर-संक्रांति की पूर्व संध्या को मनाया जाता है। मकर-संक्रांति को 'माघी' भी कहते हैं। तमिलनाडु के लोग इस त्योहार को धूम-धाम से मनाते हैं। हर प्रांत में इसका नाम और मनाने का तरीका अलग-अलग होता है। अलग-अलग मान्यताओं के अनुसार इस पर्व के पकवान भी अलग-अलग होते हैं। लेकिन दाल और चावल की खिचडी इस पर्व की प्रमुख पहचान बन चुकी है। विशेष रूप से गुड और घी के साथ खिचडी बनाया जाता है।

मकर संक्रांति

- श्रीमती एन.मनोरमा

संक्रांति त्योहार को आन्ध्रा के लोग भी बहुत धूम धाम से मनाते हैं। यह तीन दिनों का बडा त्योहार है। पहला दिन भोगी कहलाता है। दूसरा दिन संक्रांति कहलाता है। तीसरा दिन कनुमा कहलाता है।

पहला दिन - भोगी

भोगी के दिन सारे घर की सफाई करके कूडा-कचरा को घर-घर के सामने खाली जगह पर इकट्ठा कर आग से जलाया जाता है। गाँवों में चौरस्ते मिलने की जगह पर भोगी ज्वाला को तैयार करते हैं। परिवार के सभी लोग विशेषकर बालक-बालिकाएँ नहा-धोकर, नए कपडे पहनकर उस आग के चारों ओर बैठ जाते हैं। भोगी के दिन शाम को बच्चे अपने-अपने घरों में गुडियों को सजाते हैं। घर के सदस्य अपने रिश्तेदारों से मिलकर छोटे बच्चों के सिर पर बेर, चेना, फूल, गन्ने के टुकडे और सिक्कों को डालकर आशीर्वाद देते है। यह त्योहार के दिन सूर्य भगवान को आराधन करते है। सूर्य के समान रंग और आकार रहनेवाला बेर के फल और सिक्कों को मिलाकर बच्चों के शिर पर डालते हैं। सूर्य भगवान का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए भोगी फलों को बच्चों के शिर पर डालते हैं।

दूसरा दिन - संक्रांति

दूसरा दिन को संक्रांति त्योहार मनाते हैं। बच्चे और बडे नये-नये कपडे पहनकर खुशी से इस त्योहार को मनाते हैं। इस दिन को नया चावल, नया गुड, नयी मूँग की दाल तथा दूध आदि मिलाकर एक तरह का मिष्ठान्न पकाते हैं, जिसे आन्ध्र भाषा में ''पोंगलि'' कहते हैं। संक्रांति के दिन लोग तिल से मृतकों को तर्पण छोडते हैं। लोग अपने-अपने रीति रिवाजों के अनुसार पितृदेवताओं को तर्पण देते हैं। और नयेवस्त्र भी समर्पण करते हैं। उत्तरायण पुण्यकाल होने के कारण संक्रांति के दिन करनेवाला हर दान श्रेष्ठ होता हैं। उत्तरायण काल में दिये जानेवाले दानों में धान, फल, वस्त्र, सब्जी, तिल और गन्ना आदि मुख्य हैं। इस दिन को जो लोग गोदान करेंगे उन्हें स्वर्गवास मिलेगा। हरिदास हरिनाम का कीर्तन करते हुए घर के द्वार पर आता है। गंगिरेद्दु (बैल) घर के सामने आँगन में खडा होता है तो वह प्रांत पवित्र माना जाता है।

भगवान बालाजी का कृपा-कटाक्ष, आशीर्वाद से आप और अपने परिवार पर सदा भरपूर रहने के लिए सप्तगिरि की ओर से लेखक-लेखिकाओं, एजेंटों एवं पाठकों को 'मकर संक्रांति' की हार्दिक शुभकामनाएँ।

- प्रधान संपादक

तीसरा दिन - कनुमा

तीसरा दिन यानी कनुमा के दिन बैलों की पूजा होती है। किसान, पशु को शुभकामनाएँ देने के लिए इसे मनाते हैं। गायों के माथे पर हल्दी और कुंकुम तथा सींगों व खुरों को रंग लगाये जाते हैं। गले में फूल की मालाएँ तथा घंटियाँ बाँधी जाती हैं। अंत में गायों की पूजा करते हैं। कुछ जगहों पर कनुमा के दिन मेला-उत्सव भी संपन्न की जाती है।

संक्रांति त्योहार के समय आंध्रा प्रांत के कुछ जगहों पर, गाँव के बाहर इस भिडन्त के लिए निश्चित जगह होती है। इस भिडन्त को ''कोडि पंदेलु'' कहते हैं। आजकल इस तरह की मुर्ग-भिडन्त बहुत कम हो गयी है। फिर भी हर एक गाँव या शहर में ''कोडि-पंदेलु'' होते हैं। ''कनुमा'' के दिन उडद से बनी आहार पदार्थ को खाने के लिए ''गारेलु या वडा'' बनाते हैं। संक्रांति के दिनों में लडकियाँ गोब्बेम्मा (गोबर) के गोल के पास घूम कर गाना और नृत्य करते हैं। इस प्रकार के गोब्बेम्मा को प्रातःकाल रंगोली में रख कर फूलों से सजाते हैं।

उत्तर भारत में इस पर्व पर गंगा, यमुना अथवा पवित्र नदियों या सरोवरों में स्नान करके अथवा तिल, गुड, खिचडी आदि दान देने का महत्व है। लडकीवाले अपनी कन्या के ससुराल मकर संक्रांति पर मिठाई, रेवडी गजक तथा गर्म वस्त्रादि भेजते हैं। उत्तर भारत में नववधू की पहली संक्रांति का विशेष महत्व है। नव-वधू के मायके से वस्त्र, मिठाई तथा बर्तन आदि सामान को भेजने की प्रथा है।

पंजाब की लोहडी हसी-खुसी और उल्लास का विशिष्ट पर्व है। मकर-संक्रांति की पूर्व संध्या पर लकडियाँ एकत्रित कर जलाई जाती है। तिलों, मक्की की खोलों से अग्नि-पूजन किया जाता है। अग्नि के चारों ओर नाचना-गाना पर्व के उल्लास का प्रतीक है। प्रत्येक पंजाबी परिवार में नव-वधू या नव शिशु की पहली लोहडी को विशेष समारोह से मनाया जाता है।

पंजाब और हरियाणा में इस समय नई फसल का स्वागत किया जाता है। और लोहडी पर्व मनाया जाता है। वही असम में बीहू के रूप में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। हर प्रांत में इसका नाम और मनाने का तरीका अलग-अलग होता है। संक्रांति एक कृषक प्रधान त्योहार है। इस त्योहार के दिन गाय, बैल आदि पालतू जानवरों का भी आदर सत्कार करना इस त्योहार की प्रमुख विशेषता है।

गाय की विशिष्टता

- श्री सुधाकर रेड्डी, मोबाइल - 9866060269

हमारे देश में 'गाय' को 'माँ' का दर्जा दिया गया है, इसलिए उन्हें 'गोमाता' कहते हैं। हमारे शास्त्रों के अनुसार गाय को पूजनीय बताया गया है। गाय का दूध से लेकर गोबर, मूत्र आदि सब कुछ हमारे लिए अमृत तुल्य होता है।

देसी गाय :

गोवंशीय देसी प्रजातियाँ संसार में सर्वाधिक उपयोगी हैं। इन देसी गायों का दूध अमृत के समान है। इनमें बीमारियों से लडने की प्रतिरोधक क्षमता विदेशी गाय के मुकाबले कहीं ज्यादा है। वैज्ञानिकों के शोध में यह प्रामाणिक हो चुका है कि भारत की अधिकांश देशी नस्लों की गाय का दूध बेहद अधिक पौष्टिक है, परन्तु, वास्तविकता यह है कि देशी गाय की शुद्ध नस्ल बहुत कम संख्या में हैं। लोगों द्वारा अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए क्रास ब्रीडिंग के माध्यम से ज्यादा दूध देनेवाली गायें पैदा की गई हैं; जिससे शुद्ध नस्ल गायों की संख्या घटती चली गई।

गो माता की सेवा :

कहते है कि जो गोमाता के खुर से उड़ी हुई धूलि को सिर पर धारण करता है, वह मानो तीर्थ के जल में स्नान कर लेता है और सभी पापों से छुटकारा पा जाता है। पशुओं में बकरी, भेड, ऊँटनी, भैंस का दूध भी काफी महत्व रखता है। किंतु केवल दूध उत्पादन को बढ़ावा देने के कारण भैंस प्रजाति को ही प्रोत्साहन मिला है, क्योंकि यह दूध अधिक देती है व वसा की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे घी अधिक मात्रा में प्राप्त होता है।

गाय का दूध गुणात्मक दृष्टि से अच्छा होने के बावजूद कम मात्रा में प्राप्त होता है। दूध अधिक मिले, इस के लिए कुछ लोग गाय और भैंस का दूध क्रूर और अमानवीय तरीके से निकालते हैं। गाय का दूध निकालने से पहले यदि बछडा/बछिया हो तो पहले उसे पिलाया जाना चाहिए। वर्तमान लोग बछडे/बछिया का हक कम करते हैं। साथ ही इंजेक्शन देकर दूध बढ़ाने का प्रयास करते है, जो कि उचित नहीं है।

प्राचीन ग्रंथों में गाय की प्रस्तावना :

प्राचीन ग्रंथों में सुरभि (इन्द्र के पास) कामधेनु (समुद्र के मंथन के 14 रत्नों में एक) पद्मा, कपिला आदि गायों का महत्व बताया गया है। हमारा पूरा जीवन गाय पर आधारित है। शिव मंदिर में काली गाय के दर्शन मात्र से काल सर्प योग निवारण हो जाता है।

गाय के पीछे के पैरों के खुरों के दर्शन करने मात्र से कभी अकाल मृत्यु नहीं होती है। गाय की प्रदक्षिणा करने से चारों धाम के दर्शन लाभ प्राप्त होता है, क्योंकि गाय के चार धाम है। जिस प्रकार पीपल का वृक्ष एवं तुलसी का पौधा आक्सीजन छोड़ते है। एक छोटा चम्मच देसी गाय का

घी जलते हुए कडे पर डाला जाए तो एक टन आक्सीजन बनती है। इसलिए हमारे यहाँ यज्ञ हवन अग्नि-होम में गाय का ही घी उपयोग में लिया जाता है। प्रदूषण को दूर करने का इससे अच्छी और कोई साधन नहीं है।

धार्मिक ग्रंथों में गाय की प्रस्तावना :

धार्मिक ग्रंथों में लिखा है ''गावो विश्वस्य मातरः'' अर्थात् गाय विश्व की माता है। गो माता की रीढ़ की हड्डी में सूर्यनाडी एवं केतुनाडी साथ हुआ करती है, गोमाता जब धूप में निकलती है तो सूर्य का प्रकाश गोमाता की रीढ़ पर पड़ने से घर्षण द्वारा केरोटिन नाम के पदार्थ बनता है। जिसे स्वर्णाक्षर कहते है। यह पदार्थ नीचे आकर दूध में मिलकर उसे हल्का पीला बनाता है। इसी कारण गाय का दूध हल्का पीला नजर आता है। इसे पीने से बुद्धि का तीव्र विकास होता है। जब हम किसी अत्यंत अनिवार्य कार्य से बाहर जा रहे है और सामने गाय माता के इस प्रकार दर्शन हो कि वह अपने बछडे या बछिया को दूध पिला रही हो तो हम समझ जाना चाहिए कि जिस काम के लिए हम निकले है वह कार्य अब निश्चित ही पूर्ण होगा।

गो माता का जंगल से घर वापस लौटने का संध्या का समय (गोधूलि वेला) अत्यंत शुभ एवं पवित्र है। माँ शब्द की उत्पत्ति गो मुख से हुई है। मानव समाज में भी माँ शब्द कहना गाय से सीखा है। जब गो वत्स रंभाता है तो माँ शब्द गुंजायमान होता है। गो-शाला में बैठकर किए गए यज्ञ हवन, जप-तप का फल कई गुणा मिलता है। बच्चों को नजर लग जाने पर, गोमाता की पूँछ से बच्चे को झाडे जाने से नजर उतर जाती है; इसका उदाहरण ग्रंथों में पढ़ने को मिलता है। जब पूतना उद्धार में भगवान श्रीकृष्ण को नजर लग जाने पर गाय की पूँछ से नजर उतारी गई।

गो के गोबर से लीपने पर स्थान पवित्र होता है। गो-मूत्र का महत्व के बारे में अथर्वण वेद, चरकसंहिता, राजत्रिपटु, बाणभट्ट, अमृत सागर, भाव सागर, सश्रुत संहिता में सुन्दर वर्णन किया गया है। काली गाय का दूध त्रिदोष नाराक सर्वोत्तम है। रूसी वैज्ञानिक शिरोविच ने कहा था कि गाय के दूध में रेडियो विकरण से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है। गाय का दूध एक ऐसा भोजन है, जिस में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड, दुग्ध, शकरा, खनिज लवण, वसा आदि मनुष्य शरीर के पोषक तत्व भरपूर पाए जाते हैं। गाय का दूध रसायन का कार्य करता है।

गो माता के विविध नाम :

हिन्दू धर्म में गाय को माता, कामधेनु, कल्पवृक्ष और सभी कामनाओं को पूर्ति करनेवाली के रूप में बताया गया है। गाय माता के संपूर्ण शरीर में तैंतीस कोटी देव-देवताओं का वास होने का उल्लेख भी शास्त्रों में मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण गो सेवा के अनन्य प्रेमी थे। शास्त्रों में गाय माता के 108 नाम बताए गए है। कहा जाता है कि गाय के इन 108 नामों का जप करने से भगवान श्रीकृष्ण प्रसन्न हो जाते है। जाने गो माता के कौन से 108 नाम का जप करने से सभी कामनाएँ पूरी होने के साथ-साथ मनोवांछित फल की प्राप्ति भी होती है।

''श्री गणपति का ध्यान कर जपो गो माता के नाम।
इनके सुमिरन मात्र से संतुष्ट होंगे श्याम।''

गोमाता के 108 नाम इस प्रकार है - 1)कपिला, 2)गौतमी, 3)सुरभी, 4)गौमती, 5)नंदिनी, 6)श्यामा, 7)वैष्णवी, 8)मंगला, 9)सर्वदेव वासिनी, 10)महादेवी, 11)सिंधु अवतारिणी, 12)सरस्वती, 13)त्रिवेणी, 14)लक्ष्मी, 15)गौरी, 16)वैदेही, 17)अन्नपूर्णा, 18)कौशल्या, 19)देवकी, 20)गोपालिनी, 21)कामधेनु, 22)आदिति,

23)माहेश्वरी, 24)गोदावरी, 25)जगदम्बा, 26)वैजयंती, 27)रेवती, 28)सती, 29)भारती, 30)त्रिविधा, 31)गंगा, 32)यमुना, 33)कृष्णा, 34)राधा, 35)मोक्षदा, 36)उत्तरा, 37)अवधा, 38)ब्रजेश्वरी, 39)गोपेश्वरी, 40)कल्याणी, 41)करुणा, 42)विजया 43)ज्ञानेश्वरी, 44)कालिंदी, 45)प्रकृति, 46)अरुंधति, 47)वृंदा, 48)गिरिजा, 49)मनहोरणी, 50)संध्या, 51)ललिता, 52)रश्मि, 53)ज्वाला, 54)तुलसी, 55)मल्लिका, 56)कमला, 57)योगेश्वरी, 58)नारायणी, 59)शिवा, 60)गीता, 61)नवनीता, 62)अमृता, 63)स्वाहा, 64)धनंजया, 65)सिद्धिश्वरी, 66)निधि, 67)अमरो, 68)ऋद्धिश्वरी, 69)रोहिणी, 70)दुर्मा, 71)दूर्वा, 72)शुभमा, 73)रमा, 74)मोहनेश्वरी, 75)पवित्रा, 76)शताक्षी, 77)परिक्रमा, 78)पितरेश्वरी, 79)हरसिद्धि, 80)मणि, 81)अंजना, 82)धरणी, 83)विंध्या, 84)नवधा, 85)वारुणी, 86)सुवर्णा, 87)रजना, 88)यशश्विनी, 89)देवेश्वरी, 90)ऋषभा, 91)पावनी, 92)सुप्रभा, 93)वागेश्वरी, 94)मनसा, 95)शाण्डिली, 96)वेणी, 97)गरुडा, 98)त्रिकुटा, 99)औषधा, 100)कालांगि, 101)शीतला, 102)गायत्री, 103)कश्यपा, 104)कृतिका, 105)पूर्णा, 106)तृप्ता, 107)भक्ति, 108)त्वरिता।

गोदान :

दानों में तीन मुख्य दान है। वे गोदान, भूदान एवं कन्यादान है। 'गोदान' को अत्यंत पवित्रता से माना जाता है। गोदान लेने का अधिकारी वह ब्राह्मण है, जो अंगहीन न हो, यज्ञ करा सकता हो, शांत और सदाचारी हो, जिसका कुटुम्ब भरा-पूरा हो और जिसकी पत्नी जीवित हो।

गोदान से पहले गाय का श्रृंगार और पूजन किया जाना चाहिए। गोदान से पहले वस्त्र, आभूषण और अन्य सामग्री से गाय की पूजा करनी चाहिए। गाय के सभी अंगों में देवताओं का वास है। उसकी सींगों में ब्रह्म और विष्णु का निवास है। सभी स्थावर और चर तीर्थ इसकी सींगों के अगले हिस्से में रहते है। महादेव इसके सिर में स्थित है। माथे के अगले हिस्से में गौरी और नथने में कार्तिकेय का निवास है।

दोनों नाक में कम्बल और अश्वतर नाग विराजते है, दोनों कानों में अश्विनी कुमार का निवास है। इसकी आंखों में सूर्य और चन्द्रमा, दाँतों में वासुदेव, जीभ में वरुण और रंभाने में सरस्वती विराजती है। इसके दोनों गालों में मास और पखवारे का वास है। दोनों होंठों में दोनों संध्या और गले में देवराज इन्द्र विराजमान है, मुख में गंधर्व, उर में संध्यागण,

जांघों में चारों पापों के साध धर्म का निवास है। खुर के बीच गंधर्व और उसके आगे नाग रहते है।

खुर के आगे-पीछे अप्सराओं का निवास है। उसकी पीठ में सभी रुद्र और जोडों में सभी वसु रहते हैं। इसके दोनों नितम्बो पर पितर और पूँछ पर चन्द्रमा का निवास है। इसकी बालों में सूर्य की किरणे विराजती है। गोमूत्र में साक्षात गंगा और गोबर में यमुना का निवास है। इसके दूध में सरस्वती और घी में अग्नि विराजमान है। अट्ठाईस करोड देवता इसके रोये में रहते है। इसके पेट में पृथ्वी और चारों स्तनों में चार समुद्र रहते हैं।

गोदान करनेवाले को इन सभी देवताओं का गाय के शरीर में आह्वान करना चाहिए। फिर भक्ति पूर्वक सोलह उपचारों से गाय की पूजा करने चाहिए। उसे वस्त्र और आभूषणों से सजाना चाहिए। उसके गले में माला पहनानी चाहिए। गाय को सूत या वस्त्र ओढकर कहना चाहिए कि- ''मैंने यह वस्त्र दिया है, गाय इसे ग्रहण करे, गोमाता तुम जगत की माता हो, तुम विष्णु के चरणों में रहती हो, तुम मेरा दिया हुआ ग्रास ग्रहण करो और मेरी रक्षा करो, तुम्हारे अंगों में चौदहो भुवन रहते है, इसलिए लोक-परलोक में मेरा कल्याण होगा। मेरे आगे गाय रहे, मेरे पीछे गाय रहे, मेरे अगल-बगल में गाय रहे। मैं गाय के बीच रहूँ।''

कनुमा त्यौहार के समय में गाय और बैलों की पूजा :

संक्रांति के समय प्रायः कनुमा के दिन बैल, गाय और उनके बछडों की पूजा विशेष रूप से किया जाता है। तमिल मान्यताओं के अनुसार माट्टु भगवान शंकर का बैल है। जिस एक भूल के कारण भगवान शंकर ने पृथ्वी पर रहकर मानव के लिए अन्न पैदा करने के लिए कहा और तब से पृथ्वी पर रहकर कृषिकार्य में मानव की सहायता कर रहा है। इस दिन किसान अपने बैलों को स्नान करवाते है। उनके सींगों में तेल लगाते हैं। एवं अन्य प्रकार से बैलों को सजाते हैं। बैलों को सजाने के बाद उनकी पूजा की जाती है। बैल के साथ ही इस दिन गाय और बछडों का भी पूजा की जाती है। कही-कही लोग इसे कनु पोंगल के नाम से भी जानते हैं, जिसमें बहने अपने भाइयों की खुशहाली के लिए पूजा करती है और भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं।

किसान की आर्थिक वृद्धि में सहायक के रूप में गोमाता :

भारत देश के किसान बहुत प्राचीन काल से गायों के पालन-पोषण में लगे हुए है। किसान खेती के साथ-साथ कई पालतू जानवरों को पालन-पोषण कर रहे हैं। उनसे उनकी वित्त रूपी वृद्धि भी हो रही है। दूध बेचने से हर दिन उनको पैसे मिलते रहते है। उनसे उनकी आजीविका में सहायता होती है। गाय के बछडे बैंस बड़े होकर बैल बनकर खेती के काम में किसान के सहायक बन गए है।

गृह प्रवेश के समय गोमाता की सेवा :

गृह प्रवेश के समय गाय और उनकी बछिया या बछडे को घर आह्वान करते है और पूरे घर में परिक्रमा करवाते है। बाद में हल्दी एवं कुंकम से तिलक लगाते है। पैरों में हल्दी और कुंकुम डालकर नमस्कार कर लेते है। गले में माला पहनाते है। गाय के पीट पर वस्त्र डालकर खाने के लिए अनाज, फल रखते हैं। इस तरह गृह प्रवेश के समय घर के मालिक दंपतियों ने गोमाता की सेवा करते हैं।

वास्तु दोष के निवारण में गाय की भूमिका :

गाय को हिन्दू धर्म शास्त्रों में माता का स्थान दिया गया है। पुराणों और उपनिषदों में भी गो माता की सेवा

को सर्वोपरि बताया गया है। वास्तु शास्त्र भी इसकी पैरवी करता है। इसके अनुसार गाय माता की यदि सेवा की जाए, तो वास्तु संबंधित कई परेशानियाँ आसानी से हल हो सकती है।

गाय की चीजों में जुडे हुए वैज्ञानिक तत्व एवं औषधीय गुण :

गाय एकमात्र पशु ऐसे है जिसका सबकुछ सभी की सेवा में काम आता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती कहते है कि एक अपने जीवन काल में 4,10,440 मनुष्यों हेतु एक समय का भोजन जुटाती है। गाय का मूत्र, गोबर के अलावा दूध से निकाला घी, दही, छाँछ एवं मक्खन आदि सभी बहुत हो उपयोगी है।

सूर्यकेतु नाड़ी सूर्य के संपर्क आने पर स्वर्ण का उत्पादन करती है। गाय के शरीर से उत्पन्न यह सोना गाय के दूध या गोमूत्र पीने से शरीर में जाता है और गोबर के माध्यम से खेतों में। कई रोगियों को स्वर्ण भस्म दिया जाता है।

वैज्ञानिक कहते है कि गाय एक मात्र ऐसी प्राणी है, जो आक्सीजन ग्रहण करता है और आक्सीजन ही छोडता है, जब कि मनुष्य सहित सभी प्राणी आक्सीजन लेते और कार्बनडाई आक्साइड छोड़ते है। पेड-पौधे इसका ठीक उल्टा करते हैं। देसी गाय के एक ग्राम गोबर में कम से कम 300 करोड जीवाणु होते हैं। भारतीय गाय के गोबर से बनी खाद ही कृषि के लिए सबसे उपयुक्त साधन थे। खेती के लिए भारतीय गाय का गोबर अमृत समान माना जाता था।

किंतु हरितक्रांति के नाम पर सन् 1960 से सन् 1985 तक रसायनिक खेती द्वारा भारतीय कृषि को लग-भग नष्ट कर दिया गया। अब खेत उर्वर नहीं रहे। अब खेतों से कैंसर जैसी बीमारियों की उत्पत्ति होती है। हरितक्रांति से पहले खेतों को गाय के गोबर में गोमूत्र, नीम, धतूरा, आक आदि के पत्तों को मिलाकर बनाए गए कीटक नाशक द्वारा किसी भी प्रकार के कीड़ों से बचाया जाता था। वैज्ञानिक कहते है कि गाय के गोबर में विटामिन बी-12 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

गोसंरक्षण में धार्मिक संस्याएँ एवं जनता :

आज भी कई घरों में गाय को रोटी रखी जाती है। कई स्थानों पर संस्थाएँ गोशाला बनाकर पुनीत कार्य कर रही है। भारत देश में गोसेवा करनेवाली प्रसिद्ध संगठन है। उन्हीं संस्थाओं में तिरुमल तिरुपति देवस्थान भी एक है। ति.ति.दे. ने गोशाला की स्थापना की और उसके द्वारा उत्पादित दूध को देवस्थान संबंधी मंदिरों को समय-समय पर वितरण कर रहा है। यह एक प्रशंसनीय कार्य है। साथ ही यांत्रिक कत्लखानों को बंद करने का आंदोलन, मांस निर्यात नीति का पुरजोर विरोध एवं गो रक्षा पालन संवर्धन हेतु सामाजिक धार्मिक संस्थाएँ एवं सेवा भावी लोग लगातार संघर्षरत है।

दुख बात का भी होता है लोग गाय को आवारा भटकने के लिए बाजारों में छोड देते है। उन्हें इनके भूख-प्यास की चिंता ही नहीं होती। यह तो पाप होता है। लोगों को चाहिए कि यदि गाय पालने का शौक है तो उनकी देखबाल भी आवश्यक है, क्योंकि गाय हमारी माता है एवं गो रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। गाय की रक्षा करने के कार्य में युवक की भूमिका अधिक होनी चाहिए। इसलिए सरकार भी गाय की रक्षा हेतु गाय संबंधित पाठों की तैयारी करके स्कूलों या कलाशालाओं के पाठ्यक्रम रखकर छात्रों में गोसेवा के प्रति जागरुकता ले आने की आवश्यकता है।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

114

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे मुमुक्षु महात्माओं! सब गीता शास्त्र का सारभूत यह चरम श्लोक है। सब गीता शास्त्र में मोक्ष के उपाय रूप से जितने धर्म कहे गये हैं उन्हें भगवान गुह्यतर ज्ञान कहते हैं और ''सर्वधर्मान्'' इस श्लोक में परमपद मिलने के लिये शरणागति योग को जो उपाय करके बताये हैं इस उपाय को सर्वगुह्यतम उपाय निर्णय किये हैं। इसका खुलासा यह भाव भया कि इसी जन्म के अन्त में संसार बन्धन से छूटकर परमपद जाने के लिये श्री भगवान की शरणागति से बढ़कर कोई भी सबके लायक सीधा और अचूक उपाय नहीं है। अपने कर्त्तव्य बल से संसार बन्धन से पार होने की इच्छा रखना और उपाय रूप से भक्तियोग अनुष्ठान करना इसीका नाम भक्ति है। और अपने कर्त्तव्य की आशा छोड़ कर श्री भगवान की कृपा के भरोसे पर इस दुरत्यय माया से पार होकर परम पद में जाकर श्री परमात्मा की नित्य सेवा मिलने की आशा रखना इसी का नाम शरणागति है। शरणागति को ही प्रपत्ति भी कहते हैं जो लोग इतरावलम्ब त्यागपूर्वक श्री भगवान की शरणागति का दृढ़ भरोसा पकड़कर रहते हैं उन लोगों के लिये शास्त्रों के नियम के अनुसार इसी जन्म के अन्त में भगवान को अवश्य परमपद देना ही पड़ता है। यद्यपि शरणागति योग में भी शरणागतों के लिये मन तथा इन्द्रियों को वश करके रहने के लिए नियम हुई है। शरणागति होने के बाद जान करके शास्त्र विरुद्ध विषयों में प्रवृत होने के लिए शास्त्रों की तरफ से मनाई भी हुई है। बड़ों की तो यहाँ तक आज्ञा है कि साधन भक्तियोग वाले अधिकारियों की अपेक्षा शरणागति का ज्यादा वैराग्य की आवश्यकता है क्योंकि उन लोगों को अनन्य भोग्य जो आत्मा का स्वरूप है इसका शास्त्रों के वचनानुसार बड़ों के द्वारा पूरा ज्ञान करा दिया गया है। तो भी इतरावलम्ब त्यागपूर्वक जो श्री भगवान के शरण हो चुके हैं उन आश्रितों के तरफ श्री भगवान का अत्यन्त झुकाव तथा ज्यादा व्यामोह देखकर परमात्मा के उन प्यारे शरणागत मुमुक्षुओं के लिए कुछ विशेष नियम शास्त्रों को करना पड़ा। वह यह है कि-

''कौटिल्ये सतिशिक्षया प्यनघयनृक्रोडी करोति प्रभु।''

इसका यह भाव भया कि शास्त्रों के मनाई करने पर भी और उसके अनुसार सदा सम्हल के रहने पर भी इस प्राकृत शरीर में रहने के कारण :-

''प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति''

इस श्रीमुख वचन के अनुसार यदि जानकर कुछ अपराध किसी शरणागत के द्वारा अनिवार्य स्वभाव के कारण परवश कदाचित हो जायेगा तो साधन स्वरूप भक्तियोग वाले अधिकारी उपासक भक्तों के समान उस शरणागत महात्मा का पुनर्जन्म तो नहीं होगा किन्तु इसी शरीर से किसी प्रकार भी उन अपराधों का फल भोगाकर शरीर छूटते समय उस प्रपन्न को कृपासिन्धु शरणागत वत्सल श्री भगवान अंगीकार कर लेते हैं। शास्त्रों के द्वारा उपासक भक्तों की अपेक्षा शरणागत मुमुक्षुओं के लिए इतनी विशेषता रखी गई है। क्योंकि उपासकों के लिए ''असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति में मतिः'' मन बश हुए बिना कर्म, ज्ञान, भक्तियोग की

सिद्धि नहीं हो सकती। इस प्रकार शास्त्रों का अटल सिद्धान्त भगवान ने बताया है।

''तस्मात्त्वमिन्द्रयाण्यादौनियम्यभरतर्षभ''

इससे उपासक अधिकारियों को चाहिए कि सबसे पहिले मन इन्द्रियों का भलीभाँति वश में कर लेवे क्योंकि उसके बिना किसी तरह भी उसका साधन सिद्ध ही नहीं हो सकता है। जब सिद्ध ही नहीं हो पायेगा तो फिर उसको फल कैसे मिल सकेगा। परन्तु शरणागत के लिए तो इस अंश की अत्यन्त सख्ती नहीं है। परन्तु एक बात को तो शरणागतों के लिए भी सख्त शत्त हुई है, वो यही है कि उपायान्तर, रक्षकान्तर त्याग करके ही श्री भगवान की शरणागति करनी चाहिए। जिस प्रकार मन, इन्द्रिय वश किये बिना कितना भी साधनयोग में परिश्रम करे परन्तु वह सिद्ध होता ही नहीं है। उसी प्रकार उपायान्तर त्याग किये बिना चाहे कितना भी भगवान की शरणागति किया करे या भले ही अपने को शरणागत माना करे या मैं भगवान का शरणागत हूँ इस प्रकार भले ही ताजिन्दगी पुकारा करे परन्तु भगवान की तरफ से उसकी शरणागतों में गिनती होती ही नहीं है। क्योंकि जहाँ-जहाँ शरणागत होने के लिए भगवान ने चेतनों को आज्ञा दी है, वहाँ-वहाँ इस बात की पहले ही शर्त रख दिया है कि इतरावलम्ब त्याग करके ही हमारी शरणागति करो तब तो शरणागति फल दे सकती है नहीं तो नहीं। जैसे :- ''मामेव ये प्रपद्यन्ते'', ''तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्येत्'' ''तमेव शरणं गच्छ'', ''मामेक मेव शरणं'' इत्यादि सभी श्रीमुख वचनों में एवकार पद आया है उसका यही मतलब है कि हे चेतनो! इतरावलम्ब त्यागपूर्वक ही हमारी शरणागति का अवलम्ब पकड़ो। इतरावलम्ब त्याग किए बिना यदि शरणागति करोगे तो वह पूर्ण रूप से काम न दे सकेगी। उस पूर्वोक्त श्लोकों में सूक्ष्मरूप से इतरावलम्ब त्याग ने की आज्ञा दी है। श्रीगीताजी के इस चरम श्लोक में तो खुलासा बतादी है कि उपायान्तर त्यागपूर्वक ही हमें उपायत्व करके स्वीकार करे। जैसे कि :-

''सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज''

इसका अर्थ यही भया कि पहले उपायान्तर को त्याग करो उसके बाद हमारी शरणागति करो तब मैं सब पापों से छुड़ाकर तुम्हें परमपद में ले चलूँगा। यदि उपायान्तर त्याग पूर्वक हमारी शरणागति तुमने कर ली तो फिर अपने उद्धार के बाबत बिल्कुल तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं है। सारांश कहने का यही आया कि शरणागति योग सरल जरूर है। माया बन्धन से छूट जाने के लिये उपाय भी सुलभ से सुलभ है। अधिकारी के लिए इसमें किसी प्रकार का झंझट भी नहीं है। इसी जन्म के अन्त में मोक्ष भी मिल जाता है। सब प्रकार से सबके लिए शरणागति योग से सुलभ कोई भी उपाय नहीं है। परन्तु इसी बात का इसमें सख्त नियम है कि अन्य किसी भी धर्म का मन से भी अवलम्ब यदि पकड़ा रहे तो यह शरणागति योग काम नहीं देता। इसलिए शरणागत अधिकारियों को चाहिए कि कर्म, ज्ञान, भक्ति, जप, तप, तीर्थ, व्रत, दान, पाठ, पूजा, श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सेवा, सख्य, आत्मनिवेदन, भगवदाराधन, भागवतार्चन इत्यादि धर्मों का बिल्कुल जड़ मूल से अवलम्ब छोड़ के भगवान की शरणागति करे। भगवान की यही आज्ञा है।

क्रमशः

पांडव तीर्थ :

(गतांक से)

''हे पांडवात्मज! कर्म फल से आज आप को ये कष्ट सता रहे हैं। आप राजमहल छोड कर वनवास पर निकले हैं। अच्छे लोगों को हमेशा विजय प्राप्त होती है। ऐसी विजय मैं आप लोगों का प्रदान करूँगा। चिंता मत कीजिए। श्री वेंकटाद्री पर भक्ति से चले जाइए। वहाँ क्षेत्रपालक परम पावन तीर्थों के पास खडे होकर स्नान, पान, जपादि कीजिए। तब आप के सारे पाप मिट जायेंगे। उस के बाद सारे मनुष्यों पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।'' ऐसा श्रीकृष्ण ने उन को उपदेश दिया। उपदेश पाकर वे पांडव वेंकटाद्री पर पहुँच गए। क्षेत्र पालक के पास सिद्ध स्थल में खडे होकर स्नान-पान निष्ठा के साथ करते-करते एक वर्ष बीत गया। तब आदर से श्री वेंकटेश्वर पांडवाग्रज युधिष्ठिर के सपने में दर्शन दे कर ''हे महाराज! अपने राज्यों पर तुम लोग लौट कर आनंद से राज्य करते रहो।'' कहा। ऐसी आज्ञा पाकर पांडुपुत्र युधिष्ठिर ने तुरंत नींद से जाग कर भीमार्जुन आदि को बुलाकर अपने सपने के बारे में बताया। तुरंत वह पत्नी समेत और भाइयों के साथ वेंकटाद्री पर पहुँच गया। वहाँ के जंगल में वास किया। फिर उधर से लौट कर शत्रुओं से युद्ध करके विजय को हासिल किया। हस्तिनापुर में राज्याभिषिक्त हुए। साथ ही नंद सुत का अनुसरण करते रहे।

पांडु सुतों के कुछ दिनों तक भक्तिपूर्वक वहाँ रहने के कारण उन के स्मरण में यहाँ के तीर्थ को 'पांडव तीर्थ' कहा जाता है। उस के महत्व के बारे में सिर्फ क्षेत्र पालक ही जानता है। अन्य लोग कुछ भी नहीं जानते हैं।

जराहरादि तीर्थों की महिमा :

इस के अतिरिक्त स्वामिपुष्करिणी की पूर्व दिशा में जराहर, लग्निम, रसायनम नामक तीन तीर्थों के साथ-साथ हरि के निवासयोग्य वैकुंठ पर्वत की गुफा तथा अष्टलोह खान होंगी। इससे अलग स्वामिपुष्करिणी द्वविंशति

जलाधिदेव श्री वेंकटेश्वर

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

शरपात दूरी पर माया तिरोहित शक्ति फैली रहती है। इसलिए वे बुधी जनों को ही दिखाई देते हैं। ऐसे महिमावान वेंकटाचल पर्वत पर लूले, शिखंडी, बधिर, अंधे, निस्संतान, धनहीन लोग श्रद्धा-निष्ठा से हरि पर मन लगाकर, निस्संशय से विश्वास करते उन पुण्य तीर्थों में स्नान करने पर सारी अपदाएँ दूर होकर सुखी रहेंगे। इस के अतिरिक्त उस पर्वत पर युग भेद से अनेक विशेष कार्य होते रहते हैं।

श्री वेंकटाचल और उस के स्वामी श्री वेंकटेश्वर इसलिए अपार जल-स्रोतों के स्वामी हैं। स्वामी ने अपने चरणों पर अनेक जल-स्रोतों को बसाया है। उन की महिमा के बारे में उन की संख्या के बारे में बताना असंभव है। आदिशेष जैसे महात्माओं के द्वारा भी यह संभव नहीं हैं। ब्रह्मांड पुराण में सूत के द्वारा इन जल-स्रोतों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। सूत ने ब्रह्मांड पुराण में स्वामिपुष्करिणी का वर्णन और परिचय देते हुए यह भी बताया कि त्रेतायुग में दशरथ महाराज भी इस पुष्करिणी की महिमा को अपने गुरु के माध्यम से जान कर उस के दर्शन किए। निस्संतान दशरथ श्री वेंकटेश्वर की कृपा से संतान को प्राप्त किया है। सूत ने स्वयं जैमिनी महा मुनि से इस के बारे में सुना था। सूत ने उसी कहानी को शौनकादि मुनियों को सुनाया।

दशरथ का वेंकटाद्री पर आना :

सूर्यवंशी राजा दशरथ निस्संतान थे। पुत्र संतान के लिए परिताप करनेवाले दशरथ ने अपने गुरु के पास जाकर उन को प्रणाम करके इस रूप में विनति की। ''हे मुनिनाथ! आप जैसे गुरुओं के होते मुझे पुत्र संतान क्यों नहीं हो रही है। मैंने कौन सा कर्म किया?'' इस रूप में कहने पर उन के गुरु वशिष्ट ने इस रूप में उत्तर दिया। ''हे राजन्! आपने तो बडा पुण्य किया है। किंतु थोडा दोष होने के कारण पुत्र संतान नहीं हुई। इसलिए कर्मों के अनुसार आप वेंकटगिरि पहाड पर जाकर पुष्करिणी में हर दिन स्नान कीजिए। उस के तट पर ही रह कर तप कीजिए। इससे आप के समस्त पाप दूर हो जाएँगे। आप के वंश को बढानेवाली पुत्र संतान होगी। राजन आप चिंता मत कीजिए। शीघ्र ही आप को वेंकटगिरि पर जाना उचित है। उस वेंकटगिरि पहाड पर श्री वेंकटेश्वर नाम से श्रीहरि अपनी देवियों के साथ महा विनोद के साथ रह रहे हैं। इसलिए वे आप के पापों को दूर करके पुत्र संतान प्रदान करेंगे। अब संदेह मत कीजिए।'' वशिष्ट की बातें सुन कर दशरथ को बहुत आह्लाद हुआ। फिर पूछा। ''वह वेंकटगिरि कहाँ पर है? वहाँ जाने के लिए शुभ मुहूर्त कौन सी है? आप शीघ्र ही मुझे बताइए। हे मुनीश्वर!'' दशरथ के इस प्रश्न के समाधान में वशिष्ट ने कहा। ''गंगा नदी के उस पार दक्षिण में, उस सुवर्णमुखी के उत्तर में एक क्रोश की दूरी पर गंगा के लिए दक्षिण में द्विशत योजनाओं की दूरी पर वेंकटगिरि है। वहाँ पर गंगा से भी पवित्र तीर्थ बहुत प्रवाहित होते हैं। सब से श्रेष्ठ स्वामी की पुष्करिणी है। वह अति दिव्य पुष्प लताओं से, मधुर फल वृक्षों से महा महिमा के साथ सर्व कालों में वसंत ऋतु की तरह वहाँ फल-पुष्प होते हैं। मेरु पहाड की तरह श्रृंगारित रथ के रूप में वेंकटाद्री दिखाई देगी। रमणीय चैत्र रथ की तरह नेत्र पर्व वह करेगी। किन्नेर, गंधर्व, गीर्वण भामिनियों के नृत्य नित्य वहाँ पर होते हैं। घने वृक्षादि से, हेम शिखरों से, वह सदा प्रकाशवान होती है। प्राकृत लोगों के लिए वह पर्वत अति सुंदर लगता है। उस पर्वत के गौरव के बारे में अतिश्रेष्ठ भी वर्णन नहीं कर पाता है? मुझ जैसे व्यक्ति के लिए तो असंभव है। हे सम्राट दशरथ! ऐसी वेंकटाद्री के लिए आज ही निकलिए। आज ही शुभ मुहूर्त है, हे राजन!'' इन बातों को सुन कर दशरथ पुत्र संतान के लिए शीघ्र ही अपने गुरु के साथ वेंकटाद्री के लिए निकले।

दशरथ ने वंशाभिवृद्धि के लिए पुत्र संतान का संकल्प करके गंगा में स्नान करके, जप-तप का आचरण करके, षोडश महादान करके, निकल कर गोदावरी, कृष्ण, मलापहरि, तुंगभद्रा आदि प्रमुख नदियों में स्नान का आचरण करते आकर उत्तुंग, तुंग, श्रृंग समेत, फल-पुष्पों से भरे, चैत्र रथ सदृश, मेरु समान दिखाई पडनेवाले वेंकटगिरि पर चढने लगे। रास्ते में अनेक गव्हार, गुफाओं के दर्शन करते वे वेंकटगिरि पर पहुँच गए।

दशरथ के द्वारा स्वामिपुष्करिणी के तट पर सत्कर्म निष्ठा में जुटे मुनिवर्यों का दर्शन करना :

पद्म, नीलोत्पल आदि प्रमुख अंबुज पुष्पों से सुशोभित, उन पर बैठने के लिए झंकार ध्वनि करनेवाले भ्रमरों के झुंड, कमलों पर बैठ कर मकरंद पीकर नशे में डूबे भ्रमरों के साथ, मत्स्य, कच्चप आदि महनीय जलचरों से शोभित, उन के कलरव से, वर्तुल लहरों से, प्रकाशवान रूप में दिखाई पडनेवाली स्वामिपुष्करिणी को देख कर दशरथ बहुत आश्चर्यचकित हुए। उस पुष्करिणी के तट पर जप-तप करनेवाले मुनिगणों को देख कर सद्भक्ति से हाथ जोड कर उन्हें प्रणाम करके वही खडे रहे। वहाँ खडे हो कर देखने पर दशरथ को उस पुष्करिणी के तट पर अनेक फल-पुष्पों से भरे श्रृंगारवन दिखाई दिए। उन वनों में जटा-जूटधारी सिद्ध पुरुष सिद्धासन, सिंहासन, भद्रासन, गोमुखासन, स्वस्तिकासन आदि अनेक प्रमुख आसनों पर बैठ कर रेचक, पूरक, कुंभक आदि योग युक्त प्राणायाम कर रहे थे। आधार, स्वाधिष्टान, मणिपूर, कानोहत, विशु, द्राज्ञा चक्र तक पहुँच कर योग साधना में लीन योग पुरुष अपने-अपने अधिष्टान देवताओं को समर्पित हो रहे थे। नाडी शोधन करके क्रम-क्रम से चक्रों को पार करते षट्चक्रों को पार करके षुषुम्ना नाडी के मार्ग से ऊर्ध्वमुखी बन कर गमन कर रहे थे। कुछ लोगों तो षुषुम्ना से भी आगे सहस्रार कमल चक्र तक पहुँच कर अमृतबिंदु का पान करके परवश होते दिखाई दे रहे थे। कुछ लोग तो हृदय कमल और कर्णिका मध्य में अंगुष्ट मात्र आकार में प्रकाशवान परम पुरुष का ध्यान करके आनंद परवश हो रहे थे। सांख्य, तारा, कामना सुयोग्यभ्यास करते अंतर्लक्ष्य, बहिर्लक्ष्य, मध्य लक्ष्यावलोकन करनेवाले भी थे। श्रोत्रा, नेत्र, नासापुट निरोध करके आत्मा-प्रत्यय प्रकाश का वीक्षण करनेवाले भी थे। दशविध नाद सुननेवाले भी थे। अंतर्लक्ष्य से एक नेत्र से स्वरूप ध्यान करनेवाले भी थे। नेत्र बंद करके, सर झुकाकार ऊर्ध्वकंठ में नाद का निरीक्षण करनेवाले भी थे। अपने को निमित्त भूल कर शेषी के लिए ध्यान करनेवाले भी थे। वे सिर्फ आत्मानुभव ही कर रहे थे। स्थूल जिह्वाग्र के बाद सूक्ष्म जिह्वाग्र को स्पर्श करते हुए एक निष्ठ होकर लंबिकायोग कुछ कर रहे थे। इस प्रकार ध्यान, षण्मुखी, शांभवी, राधा यंत्र, खेचरी मुद्राभ्यास करनेवाले थे। एक पैर पर खडे होकर सवित्वमंडल मध्य में नारायण का वीक्षण करनेवाले थे। पंचाग्नि के मध्य में बैठ कर महाघोर तप करनेवाले भी थे। नृसिंह, रामतारक मंत्र, गोपाल मंत्र, वराह मंत्र, वासुदेव द्वादशाक्षर मंत्र, नारायण अष्टाक्षर मंत्र, शुद्ध प्रणव मंत्र को नित्य सप्तकोटि बार महामंत्र को अंगन्यास, करन्यास, ध्यानपूर्वक एकाग्र चित्त से जप करनेवाले भी थे। श्रीमन्नारायण के विग्रह को ध्यान में लाकर षोडशोपचार पूजाएँ समर्पित करते नारायण मंत्र का पारायण करनेवाले भी थे। व्याग्र चर्म, कृष्णचर्म, वल्कलांबर धारण करके पर्ण, कंदादि फलहार खा कर इस प्रकार अनेक प्रकार के कर्म, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य जप, तप, होमादि सकल सत्कर्म निष्ठ बन कर रहनेवाले महामुनिजन मध्य में ब्रह्म ध्यान मग्न दिखाई दिये।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

पण्डरु मारन् पशुत्तमिळ्, आनन्दम् पाय्मदमाय्
विण्डिड एंग ळिरामानुज मुनिवेळम्, मेय्म्मै
कोण्ड नल्वेद क्कोळुन्दण्ड मेन्दि क्कुवलयत्ते
मण्डि वन्देन्नदु, वादियर्हा ळुंगळ् वाळ्वत्तदे ॥६४॥

अस्मदीयो भगवद्रामानुजाख्यो मत्तमातंगः शठजिन्मुनीन्द्रदृष्ठ सहस्रगीतिसततानु भवजनितमहानन्दरूपमदजलप्रकर्ष विशिष्टस्सन् सत्यार्थसंदर्शकवेदरू पमहत्तरलगुडालंकृतपाणिर्भूत्वा क्षिताविह समुज्रृम्भते; भो भो दुर्वादिनः। हतं हि वो जीवितम्॥

हमारे श्रीरामानुजमुनि मत्तगज श्रीशठकोपसूरी के अनुगृहीत मधुररागयुत सहस्रगीति के अनुभव से समुत्पन्न आनंदरूपी मदजलवाला होकर, सत्यार्थ प्रकाशक वेदरूपी डंडा लेकर इस भूमंडल पर संचार कर रहा है; अतः हे दुर्वादियों! तुम्हारा आयुष्य समाप्त हो गया। (जब श्रीरामानुज स्वामीजी दिव्यप्रबंधों का ठीक अध्ययन कर सत्य (नतु दूसरों की भांति मिथ्या) भूत वेदों के यथावस्थित अर्थों का वर्णन करने लेगेंगे तब दुर्वादियों को इस भूतल पर रहने का स्थान कैसे मिलेगा?)

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

कौसल्या

- डॉ.के.एम.भवानी, मोबाइल - 9949380246.

कौसल्या सुप्रजा रामा पूर्वा संध्या प्रवर्तते।

उत्तिष्ठा कमला कांता त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।

सारे भारत देश में सुप्रभात का यह श्लोक नहीं जाननेवाला कोई नहीं होगा। सुबह-सुबह सबके घरों के गूँजनेवाले यह सुप्रभात राम की माता कौसल्या के नाम से ही शुरू होता है। इसीसे पता चलता है कि कौसल्या कितनी पूजनीय और भाग्यवान है जिसे श्रीराम को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पद्म पुराण के अनुसार कौसल्या को भगवान विष्णु को बार-बार जन्म देने का सौभाग्य मिला है। वहीं अदिति के रूप में वामनजी को, कौसल्या के रूप में रामजी को, देवकी के रूप में भगवान श्रीकृष्ण को जन्म दी थी। कलियुग के कल्कि अवतार भी उसीके योनी से जन्म लेने वाला है।

पट रानी के रूप में कौसल्या :

कौसल्या कोसल देश की राज कुमारी है। अयोध्या के राजा दशरथ से उसकी शादी हो जाती है। राजा दशरथ बाद में दो शादियाँ (सुमित्रा और कैकेई से) करके उन्हें सौत लाने पर भी कौसल्या उनके प्रति स्नेह भाव से ही रहती है।

श्रीराम के राज तिलक की बात सुनकर कौसल्या बहुत खुश हो जाती है। परंपरानुसार कुल देवता की आराधना करके अपने पुत्र श्रीराम का इंतजार करती रहती है। उसी समय श्रीराम आकर उससे अपने वनवास जाने की बात कहता है। तो वह खबर सुनते ही कौसल्या दुख से विकल हो जाती है और श्रीराम को वन जाने से रोकने की भरसक कोशिश करती है। श्रीराम पर वात्सल्य से वह यह भी कहने में संकोच नहीं करती है कि माता-पिता समान वंदनीय है। इसलिए माता की आज्ञा का पालन करते हुए श्रीराम अयोध्या में ही रहना है। लेकिन बाद में श्रीराम के पितृ वाक्य पालन को समझती है और श्रीराम से उसे भी वन ले जाने की मिन्नते करती है। लेकिन श्रीराम के समझाने पर अपनी पत्नी धर्म को मानकर अयोध्या में ही रहने को राजी हो जाती है।

सीता को उपदेश :

वन जाते समय कौसल्या बेटी समान बहू सीतामैया से इस तरह की कई उपदेश भरी बातें कहती है कि- कठिन समय में हमेशा पति को साथ देना पत्नी का कर्तव्य है। मुश्किलों का सामना करनेवाले पति की छाया बनकर उसमें आत्मविश्वास को बढ़ाना पत्नी की जिम्मेदारी है। अपनी बातों से पति को कभी भी सताना नहीं चाहिए। इस प्रकार कौसल्या सीतामैया को पत्नी के धर्मों को समझाती है।

पति की देखभाल :

श्रीराम के वियोग से दुखित दशरथ कौसल्या से अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहता है कि- उसे लगता है कि उसका अंतिम समय आ गया है। उसी समय उसे

चित्रकूट पर श्रीराम से मिलाप :

जब भरत श्रीराम से मिलने चित्रकूट जाना चाहता है तो कौसल्या भी उसके साथ चलती है और श्रीराम को देख कर शोकातुर हो जाती है।

सास के रूप में कौसल्या :

कौसल्या हमेशा अपनी बहु सीतामैया को बेटी ही समझती है। इसलिए जब रामजी के साथ सीतामैया भी वन जाने को तैयार हो जाती है तब कौसल्या रामजी से सावधान होकर सीतामैया की देखभाल करने को कहती है। चित्रकूट पर श्रीराम से मिलते ही वह पहले सीतामैया का योग क्षेम ही पूछती है।

श्रवण कुमार के माता-पिता द्वारा दिया गया शाप भी याद आता है कि पुत्र वियोग से ही दशरथ की मृत्यु होगी।

शाप की बात सुनकर कौसल्या बहुत व्यथित होने पर भी पति दशरथ को समझाने की कोशिश करती है। लेकिन शाप के अनुसार दशरथ पुत्र-शोक से ही स्वर्ग सिधारता है, तो कौसल्या बहुत दुखित हो जाती है।

समझने की कुशलता :

भरत पर प्यार से उसकी माँ कैकेई राज्य को माँगकर पति की मृत्यु का कारण बन जाती है। लेकिन भरत अपनी माँ को दुत्कारकर राज्य लेने से इनकार करता है और सौतेली माँ कौसल्या से अपनी माँ कैकेई की गलती के लिए माफी माँगता है।

जब वह कौसल्या से मिलता है, तब पहले कौसल्या उससे कुपित होने पर भी बाद में भरत के निर्दोषित्व को पहचानकर उसे समझाती है। रामजी के समान उसे प्यार करती है।

राज माता कौसल्या :

चौदह साल का वनवास के साथ-साथ रावण का संहार भी करके श्रीराम अयोध्या वापस आता है। तब बडी धूम-धाम से रामजी का राज तिलक संपन्न होता है। कौसल्या राज माता बन जाती है। राम राज्य में कौसल्या के दिन बहुत आराम और खुशी से बीत जाते हैं। इस प्रकार हजारों साल बीतने के बाद कौसल्या परलोक सिधारती है।

श्रीराम को जन्म देकर कौसल्या का जीवन धन्य हो गया है। इसलिए हम फिर से श्रीराम के एक और सुप्रभात से कौसल्या के भाग्य की सराहना करेंगे।

कौसल्या तनया श्रीरामा कौस्तुभांगा
तूर्पुना भानुडुदइंचे तोयाजाक्षा
देव संबंधा कार्यालनु तीर्चुकोगा
वेग लेववय्या वेंकटेशा।

श्री प्रपन्नामृतम्

(२८वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

भगवत् प्रसाद को ग्रहण करके वैश्य की बुद्धि विमल हो गयी -

इसके बाद भगवदाराधन करके स्वयं प्रसाद सेवन करके जब श्रीभाष्यकार भक्तों को उपदेश कर रहे थे, उस समय बाहर वरदराजाचार्य अपने गुरु को तृप्त देखकर और पत्नी से सारे वृत्तान्त को जानकर बडे ही प्रसन्न हुए कि उनकी पत्नी की भी गुरु सेवा में कितनी निष्ठा है। इसके बाद वरदराज विविध प्रकार से गुरु की वन्दना करके स्वयं पत्नी के साथ प्रसन्न होते हुए अपने को कृतकृत्य माना तदनन्तर देवराज की पत्नी ने सोचा कि भगवत प्रसाद को ताजा-ताजा ही उन महाजन को मैं दे आऊँ और इसके बाद वे जैसा चाहेंगे वैसा करूँगी। यह सोचकर उसने उस महाजन को स्वयं जाकर भगवत्प्रसाद दिया। अभिलषित नायिका के हाथों भगवत्प्रसाद को पाकर उस महाजन ने उसे अत्यधिक प्रसन्न करने की इच्छा से तुरन्त ही भोजन करना शुरू कर दिया। किन्तु भगवत्प्रसाद को पाने के कारण उसकी बुद्धि विमल हो गयी। उसके हृदय में ज्ञान उत्पन्न हो गया और वह चिल्लाकर बोला- माता! मैं अज्ञानी हूँ और अपने अज्ञान के कारण आपसे अनुचित व्यवहार करना चाहता था। किन्तु अब मैं मोह-विहीन हूँ आप मेरी माँ है, और आपके पति मेरे पिता। आप दोनों ही मेरे अपराधों को क्षमा कर दें और श्रीरामानुजाचार्य से मेरे मानसिक अपराधों के लिए क्षमा-प्रार्थना करें। उस वैश्य की वाणी सुनकर वह सती साध्वी बडी ही प्रसन्न हुई और आकर सारा वृत्तान्त उसने अपने पतिदेव को सुनाया। तदनन्तर कृपावश श्रीवरदराजाचार्य ने उस वैश्य को ले जाकर श्रीरामानुजाचार्य का शिष्य बनवा दिया। वह धनवान वैश्य श्रीआचार्यानुग्रह से महान् भक्त बन गया और विपुल धनधान्य प्रदान करके उसने आचार्य की सेवा की।

॥ श्री प्रपन्नामृत का २८वाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥

क्रमशः

धर्म तथा धर्मग्रंथ और आज का युवा मानस

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालीया, मोबाइल - 9825113636

युवावस्था मनुष्य जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण और अनुपम अवस्था है। इस अवस्था में मनुष्य सर्वशक्तिमान होता है। सभी रूपों में समग्र एवं पूर्ण होता है। ऐसे में तब अपने जीवन के लिए आवश्यक सही ज्ञान-मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान-मार्गदर्शन धर्म और धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त होता है।

सत्यंवद, धर्मंचर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
आचार्याय प्रियं धनमाह्यत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।।

(तैत्तरियोपनिषद 1-11, 11 आनुवाक)

इस श्लोक में विशेषतः गुरु के द्वारा यह ज्ञान शिष्य को प्राप्त होने की बात कही गयी है। जो शिष्य गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने जा रहा है।

श्लोक का अर्थ कुछ इस प्रकार है, सत्य बोलना, धर्म का पालन करना, आलस्य को त्याग कर हमारे धर्म ग्रंथों का अध्ययन अवश्य करना, आचार्य और गुरु को मान सम्मान देकर उन्हें प्रिय धन देना और वंशपरंपरा को आगे बढाना चाहिए।

तैत्तरियोपनिषद में गुरु ने आज के नवयुवकों को बहुत अमूल्य ज्ञान इस श्लोक के माध्यम से दिया है।

आज की वास्तविकता और परिवर्तन

आज हमारे देश ने और पूरे विश्व ने बहुत तरक्की की है, विज्ञान के माध्यम से देश में कई सारे आविष्कार भी हुए हैं।

हम सब जानते हैं कि सालों पहले कोई भी काम मानव प्रयासों से होता था। एक भी काम में मानव आलस्य को अवसर नही था। किंतु आज जीवन में कई परिवर्तन हुए हैं। आज के परिवर्तन युग में ज्यादातर काम मशीन से होने लगा है। मशीनों की निर्भरता ने मनुष्य को आलसी बनाया है। मशीनों की वजह से मानव का मन भी मशीन जैसा होने लगा है। मानव-मानव के बिच का आपसी संबंध और मानव के प्रति लगाव भी कम होता नजर आने लगा हैं। मानव पूरी तरह से मशीन और कम्प्यूटर का कीडा बन गया है। मानव और हमारे युवाओं का कोइ भी प्रश्न कम्प्यूटर और इन्टरनेट हल कर देता है और तो आज के युवक और युवतियाँ 'वोटसेप', 'इन्स्टाग्राम' और 'फेसबुक' जैसे सोशियल मीडिया में पूरी तरह डूब गये हैं। बच्चे और युवावर्ग शारीरिक कसरत से दूर होकर टीवी और वीडियो गेम जैसी मानसिक कसरत का शिकार हो गये हैं। लोग टीवी प्रोग्राम में इतना मशगूल रहते हैं कि घर आये अतिथि का आदर सत्कार और मान सम्मान को भूल गए नजर आते हैं। ऐसे परिवर्तनशील समय में नैतिक मूल्यों का हनन होने लगा है। इस की वजह से युवावर्ग अनुशासन और प्रेम से बहुत दूर हो चुका है।

विशेष रूप से परिवर्तनशील इस समय में सबकुछ ऑनलाइन हो गया है। घर से और आफिस से सब काम इन्टरनेट माध्यम से हो जाते हैं। इसकी वजह से मानव - मानव के बीच का प्रेम सबकुछ नष्ट होने लगा है। मानव घरकुकडी बन गया है और अपने घर में अपने से ही अंजान बन के रहने लगा है। सोशियल

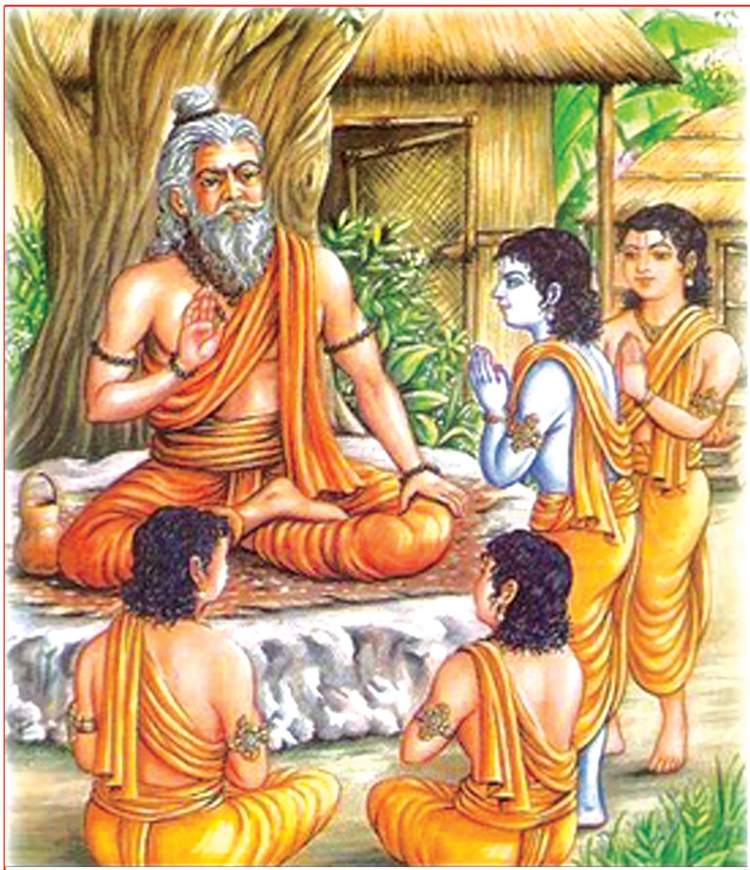

मीडिया की वजह से युवाओं को सही और गलत का भेद भी मालूम नही रहा। आज के युवावर्ग और सब मानव, इन्टरनेट के आविष्कार से पूरी तरह इनमें डूब गये हैं। और तो और इन्टरनेट का गुलाम भी हो गए हैं।

आज के परिवर्तनों में नैतिक मूल्यों कि परिस्थिति

ऐसी परिस्थितियों में आज के युवा धर्म की असल परिभाषा से वंचित है। हमारे धर्म-ग्रंथों, शास्त्रों, अमूल्य वेदों और पुराणों से तो वह काफी दूर ह। मानसिक कसरत से आलसी भी हो गया है। साथ में नैतिक मूल्यों, गुरु और आचार्य के प्रति मान सम्मान की भावनाओं से भी दूर होते चला जा रहा है।

आज के युवा जिस परिवर्तन शैली में डूबे है, उन्हें यह मालूम नहीं कि ये परिवर्तन, ये विज्ञान का आविष्कार, इन्टरनेट का आविष्कार ये सब हमारे पुराणों और वेदों का ही आशिर्वाद हैं। इसकी नीव में हुए वेदों और पुराणों से हम पूरी तरह से दूर हो चुके हें।

ऐसी परिस्थितियों में आज के युवाओं धर्म की परिभाषा से भी दूर होने लगे हैं। हमारे धर्म-ग्रंथों के बारे में तो कोई परिचय भी नही। आलस्य से भरपूर हम नैतिक मूल्यों एवं गुरु और आचार्य के प्रति मान सम्मान की भावनाओं से बहुत दूर जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में हमारी संस्कृति की, हमारे धर्म शास्त्रों की और धर्मग्रंथों के बारे में उन्हें संबद्ध रखना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि हमारा धर्म भी है। इसे समझने के लिए हमें रामायण को टटोलना चाहिए।

इस विचार की पूर्ति हेतु रामायण का अनुसंधान

'रामचरितमानस' एक ऐसा चरितवान पवित्र ग्रंथ है जिसमें हमें धर्म का रक्षण, धर्मग्रंथों का रक्षण, ऋषियों और आचार्यों का मान सम्मान के साथ-साथ वंश-परंपरा की भी रक्षा करेने के अनेक विचार व्यक्त किए गए हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा दशरथ के चारों पुत्र, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के जीवन पर दृष्टि डालने से मालूम पडता है कि चारों पुत्र आज्ञाकारी और संस्कारों का समुंदर थे। बाल्यावस्था में गुरु के आश्रम में रहकर अनेकानेक प्रकार की विध्या प्राप्त की। कभी भी उनके जीवन में आलस्य का दर्शन हुआ ही नही। धर्म की रक्षा के लिए ऋषि के महा यज्ञ को असुरों से बचाया। गुरु के साथ-साथ माता-पिता का भी मान सम्मान भी करते रहे। गुरु के आज्ञानुसार चारों भाईयों ने वंशपरंपरा की रक्षा हेतु विवाह भी किया। बाद में प्रभु श्रीराम ने माता कैकेयी और पिता दशरथजी की आज्ञा को शिर पर धारण करके चौदह साल के लिए, राज-सुख, अलंकार आदि को त्याग करके कंबल और योगीवस्त्र धारण करके वन में चल बसे।

प्रकृति का आनंद लेते आलस्य को त्याग कर सचेत होकर वनयात्रा में आगे बढे, वनयात्रा में कई सारे ऋषि-मुनियों का संपर्क होने लगा। ऋषि-मुनियों से धर्म संबंधी चर्चा विचार करके ज्ञान संपादित करके उनको मान सम्मान देते आगे बढते रहे। इस समय में असुर रावण ने सीता मैया का अपहरण कर लिया। सीता मैया की खोज करने में, धर्म की रक्षा हेतु भी कई सारी कठिनाइयों का सामना किया। रास्ते में कई जीवों का उद्धार भी किया। वनवास के दौरान वानरराज और हनुमानजी की सहायता लेकर समुंदर पर सेतु का निर्माण करके लंका पहुँचे। वहाँ रावण और अनेक असुरों के साथ महायुद्ध करके सबको पराजित किया। अंत में धर्म की रक्षा और स्थापना हेतु महा पराक्रमी रावण का भी संहार किया। सीता मैया को मुक्त करवाकर वापस अयोध्या पहुँचे। ऐसी कठिनाइयों का सामना करके अनेक जीवों का उद्धार करके, रात दिन एक करके श्रीराम ने धर्म की रक्षा की। बाद में सभी भाईओं ने वंश-परंपरा को आगे बढाया और अयोध्या में रामराज्य को स्थापित किया। समय आने पर राम ने अपने पुत्रों लव और कुश को राज्य-भार सौंपकर अपना कार्य पूरा करके वैकुण्ठ गमन किया।

संस्कृत सुभाषित का संदेश

आज के नवयुवकों को परिवर्तन के साथ-साथ हमारे धर्म की और हमारी संस्कृति की रक्षा हेतु धर्म के पथ पर चलने का संदेश दिया है। अपने धर्मग्रंथों का अभ्यास करके उन का अनुसरण का प्रयास करना चाहिए। इस के साथ-साथ अपने गुरु, माता-पिता और बुजुर्गों का मान सम्मान भी करना चाहिए। आज के युवाओं को यह समझना चाहिए कि धर्म और कर्म से ही जीवन उन्नत बनता है।

जय श्रीमन्नारायण

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'

५. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

जनवरी २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

फरवरी २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

मार्च २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

जनवरी २०२२

०१ नूतन अंग्रेजी वर्ष
०७-१३ श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
१३ वैकुंठएकादशी
१४ भोगी, श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थ मुक्कोटी
१५ मकर संक्रांति
१६ कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
१७ श्री रामकृष्ण तीर्थ मुक्कोटी
१८ तिरुमल श्रीहरि के उपस्थिति में
संपन्न प्रणयकलह महोत्सव
२६ भारत गणतंत्र दिवस

फरवरी २०२२

०१ श्री पुरंदरदास जी का आराधनोत्सव
०२-१० देवुनि कड़पा
श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
०५ वसंतपचंमी
०८ रथसप्तमी, भीष्माष्टमी
१२ भीष्म एकादशी
१६ श्री कुमारधारा तीर्थ मुक्कोटी
२०-२८ श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
२२ से मार्च ०३ तक तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

मार्च २०२२

०१ महाशिवरात्रि
१०-१८ तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का
ब्रह्मोत्सव
१३-१७ तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
१७ होली
१८ श्री लक्ष्मीजयंती, श्री तुंबुरु तीर्थ मुक्कोटी
२९ श्री अन्नमय्या वर्धंति
३० से अप्रैल ०७ तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अप्रैल २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

मई २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जून २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

अप्रैल २०२२

०२ 'श्री शुभकृत्' तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि'
०३ श्री मत्स्यजयंती
०६-१४ वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१०-१८ ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१० श्रीरामनवमी
१४ तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
१४-१६ तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव
१६-२४ नागलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

मई २०२२

०३ अक्षयतृतीया, श्री परशुराम जयंती
०५ श्री रामानुज जयंती
०६ श्री शंकराचार्य जयंती
१०-१२ तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
१३-२१ ऋषिकेश, नारायणवनम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१४ श्री नृसिंह जयंती
१४-१७ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
१५ श्री कूर्म जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
१६ श्री अन्नमय्या जयंती
१७ तिरुपति गंगजातरा (मेला)
२३-३१ कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
२५ श्री हनुमज्जयंती

जून २०२२

०५-१३ तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१०-१४ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
१०-१८ अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१२-१४ तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
२०-२२ तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

जुलाई २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

अगस्त २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

सितंबर २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

जुलाई २०२२

०३-०५ श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का साक्षात्कार वैभवोत्सव

०९-११ तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक

०९-१२ तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का पवित्रोत्सव

१३ गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा

१७ तिरुमल आणिवर आस्थान

२९ श्री चक्रत्ताल्वार वा.ति.न.

अगस्त २०२२

०१ नागचतुर्थी

०२ गरुडपंचमी

०५ श्री वरलक्ष्मीव्रत

०६ मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति

०७-१० तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव

११ श्री विखनस महामुनि जयंती, राखी

१२ श्री हयग्रीव जयंती

१३ गायत्रीजपम्

१५ भारत स्वतंत्रता दिवस

१९ श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी

२९ श्री बलराम जयंती

३० श्री वराह जयंती

३१ श्री गणेश चतुर्थी

सितंबर २०२२

०१ ऋषिपंचमी

०७ श्री वामन जयंती

०७-१० तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव

०९ श्री अनंतपद्मनाभव्रत

२६ देवी नवरात्रि उत्सव आरंभ

२६ से अक्तूबर ०५ तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव

२७ से अक्तूबर ०५ तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अक्तूबर २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

नवंबर २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

दिसंबर २०२२

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अक्तूबर २०२२

०१ तिरुमल श्री बालाजी का गरुडसेवा
०२ सरस्वतीपूजा, गांधी जयंती
०३ दुर्गाष्टमी
०४ महर्नवमी
०५ विजयदशमी
२४ नरक चतुर्दशी, दीपावली
२५ श्री केदारगौरीव्रत
२९ नागुलचविति

नवंबर २०२२

०१ तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग
०५ कैशिकद्वादशी
१४ बाल दिवस
२०-२८ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
२१ श्री धन्वन्तरी जयंती
२४ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
२८ पंचमीतीर्थ
२९ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग, सुब्रह्मण्य षष्ठी

दिसंबर २०२२

०४ श्री गीताजयंती
०५ श्री चक्र तीर्थ मुक्कोटी
०६ तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का कृत्तिका दीपोत्सव
०७ श्री दत्तजयंती
०८ श्री कपिल तीर्थ मुक्कोटी
१७ धनुर्मास आरंभ
२१ हनुमद् व्रत

ऋषि-मुनि

महर्षि अगस्त्य

- डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

भारत हमेशा से तपोभूमि रही है। इस धरती पर अनेकों महापुरुष एवं ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया। इन्हीं महापुरुषों में से अगस्त्य ऋषि भी एक थे। महर्षि अगस्त्य एक वैदिक कालीन महान ऋषि थे। इन्हें सप्तर्षियों में से एक माना जाता है और प्रसिद्ध १८ सिद्धों में से भी एक माना जाता हैं। ऐसी मान्यता है कि वह ५००० से अधिक वर्षों तक जीवित रहे और वह कई वर्षों तक पोथिगई पहाडियों में रहे थे। रामायण और महाभारत में अगस्त्य ऋषि का उल्लेख मिलता है। महर्षि अगस्त्य का जन्म वाराणसी में हुआ था। उनके जन्म तिथि का निर्णय अभी तक नहीं हो पाया है। क्योंकि इस विषय में कोई महत्वपूर्ण सबूत प्राप्त नहीं है। लेकिन कुछ प्रमाण ऐसे भी हैं जिनके अनुसार महर्षि अगस्त्य का जन्म श्रावण शुक्ल पंचमी काशी में हुआ था। जिसे आज अगस्त्य कुंड के नाम से जाना जाता है। दक्षिण भारत में उनकी लोकप्रियता अधिक है।

महर्षि अगस्त्य को पुलस्त्य ऋषि का पुत्र माना जाता जो ब्रह्म के दस मानस पुत्रों में से एक थे और प्रथम मन्वन्तर के सात सप्तर्षियों में से एक थे। उनके भाई का नाम विश्रवा था जो रावण के पिता थे। महर्षि अगस्त्य का विवाह विदर्भ देश की राजकुमारी लोपामुद्रा से हुआ था जो विद्वान और वेदज्ञ थीं। दक्षिण भारत में इसे मलयध्वज नाम के पांड्य राजा की पुत्री बताया जाता है। वहाँ इसका नाम कृष्णेक्षणा है। इनका इध्मवाहन नाम का पुत्र था। महर्षि अगस्त्य को मंत्रदृष्टा ऋषि कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने तपस्या काल में उन मंत्रों की शक्ति को देखा था। ऋग्वेद के कई मंत्रों की रचना महर्षि अगस्त्य ने की है तथा ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 165 सूक्त से 191 तक के सूक्तों को बताया था। अगस्त्य के बारे में कहा जाता है कि एक बार इन्होंने अपनी मंत्र शक्ति से समुद्र का समूचा जल पी लिया था। यह घटना उस समय की थी जब राक्षस राज वरतासुर के आतंक से धरती कांप उठी थी। और देवताओं और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ और वरतासुर मारा गया। राक्षस राज वरतासुर के वध होने के बाद बहुत से राक्षस, राजा के अभाव में देवताओं के भय से यहाँ वहाँ छिपते भागते फिर रहे थे और देवताओं ने राक्षसों को ढूंढ-ढूंढ कर मारा। तब बहुत से राक्षस समुद्र में प्रवेश कर छुप गए और वहीं छुपे-छुपे देवराज इंद्र की वध की योजना बनाने लगे। तब राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य ने सुझाव दिया कि पहले ऋषि-मुनियों को नष्ट कर दिया जाये तो देवराज का वध करना आसान होगा। क्योंकी देवताओं की शक्तियाँ ऋषि-मुनियों के द्वारा किये गए पूजा-पाठ, यज्ञ आदि से दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती हैं। अब राक्षस दिन में समुद्र में छुपते और रात में निकलकर ऋषि-मुनियों के यज्ञ नष्ट करते तथा उन्हें मारकर खा जाते थे।

इस प्रकार ऋषि समुदाय में हाहाकार मच गया, क्योंकी देवता भी ऋषि-मुनियों की रक्षा करने में असमर्थ थे। तब सभी देवता भगवान विष्णु के पास पहुँचे और सारी घटना से अवगत कराया तो भगवान विष्णु बोले तुम्हें समुद्र को सुखाना होगा तब समुद्र सूखने पर सभी राक्षसों का वध कर सकते हो, यही मात्र एक उपाय है। किन्तु प्रश्न यह था इतने विशाल समुद्र को कैसे सुखाया जाये। तब भगवान विष्णु ने कहा कि पूरे समुद्र को सुखाने की शक्ति सिर्फ अगस्त्य ऋषि के पास है। अगर तुम सब उनके पास जाकर प्रार्थना करोंगे तो वह तुम्हारी विनती अवश्य स्वीकार कर लेंगे।

तब सभी देवता अगस्त्य ऋषि के पास पहुँचे और उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया। अगस्त्य ऋषि मान गए और समुद्र तट पर पहुँचे और देखते ही देखते सारे समुद्र को पी गए। इसके बाद सभी देवताओं ने मिलकर राक्षसों का वध कर दिया। कुछ राक्षस डर कर पाताल लोक भी भाग गए। इसके बाद देवताओं ने कहा अगस्त्य ऋषि आप समुद्र का जल वापस भर दीजिए, तब अगस्त्य ऋषि ने उत्तर दिया- हे! देवताओं अब यह संभव नहीं है। क्योंकी जो समुद्र का जल मैंने पिया था वह पच गया है। अब तुम्हें कोई दूसरा उपाय करना होगा। इससे सभी देवी देवता आश्चर्य हुए और ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। ब्रह्मा जी ने कहा जब भगीरथ धरती पर गंगा लाने का प्रयत्न करेंगे तब समुद्र जल से भर जाएगा।

इसी प्रकार इल्वल (इसका दूसरा नाम आतापी था) तथा वातापी नामक दुष्ट दैत्यों द्वारा हो रहे ऋषि-संहार को अगस्त्य ने ही बंद करवाया था। हिंदू पौराणिक कहानियों के अनुसार, प्राचीन समय में दो दैत्य थे आतापी और वातापी, रिश्ते में दोनों भाई थे। माना जाता है कि आतापी के पास बहुत सारा धन था, जो इसने अपनी आसुरी शक्तियों से इकट्ठा किया था। आतापी और वातापी दोनों ही शक्तिशाली मायावी राक्षस थे। आतापी के पास ये शक्ति थी कि वह जिस किसी भी मरे हुए व्यक्ति को आवाज लगाता, वह जीवित हो उठता और दोबारा से वही पुराना शरीर धारण कर प्रकट हो जाता। वहीं, वातापी किसी का भी रूप धरने में समर्थ था। वह जब चाहे हाथी, बैल, बकरा इत्यादि बन सकता था। एक रोज अपने अहंकार में चूर निशाचर आतापी ने एक तपस्वी ब्राह्मण से इंद्र के समान पराक्रमी पुत्र मांगा। ब्राह्मण ने ऐसा करने से मना कर दिया। तभी से इन दैत्यों ने महात्माओं की हत्या करनी शुरू कर दी। वह मायावी अपने भाई वातापी को माया से बकरा बना देता था। फिर वातापी (इल्वल) उस बकरे को पकाकर उसके माँस का संस्कार किया करता और किसी न किसी ब्राह्मण को वह माँस खिलाकर, पुनः अपने भाई को पुकारा करता। इल्वल की आवाज सुनकर वातापी उस ब्राह्मण की पसली को फाड़कर हँसता हुआ निकल आता। इस प्रकार आतापी बार-बार ब्राह्मणों को भोजन कराकर, अपने भाई द्वारा उनकी हिंसा करा देता था।

ऐसे में एक पौराणिक घटना के अनुसार- अगस्त्य ऋषि को एक बार धन की आवश्यकता पड़ी। विदर्भ नरेश की पुत्री लोपामुद्रा से विवाह के पश्चात ऋषि अगस्त्य धन प्राप्ति के लिए निकल पड़े। ऋषिवर सबसे पहले सभी राजाओं में वैभवसंपन्न महाराजा श्रुतर्वा के पास गए। श्रुतर्वा ने उनके सामने अपना आय-व्यय का पूरा ब्यौरा रख दिया। ऋषिवर ने ब्यौरे को देख, धन का अभाव समझ कुछ भी लेने को मना कर दिया। इसके बाद वह राजा श्रुतर्वा के साथ राजा ब्रध्नश्व के पास पहुँचे। यहाँ भी कुछ ऐसा ही हाल हुआ। इसके बाद ऋषिवर दोनों राजाओं के साथ महाधनी राजा त्रसदस्यु के पास गए, लेकिन इनके पास भी ऋषिवर को देने के लिए पर्याप्त धन नहीं था। तब इन तीनों राजाओं ने अगस्त्य जी को बताया कि आपकी धन की इच्छा को यहीं पास में रहने वाला बड़ा धनवान दैत्य इल्वल पूरी कर सकता है। चूंकि, अगस्त्य ऋषि को तत्काल धन की आवश्यकता थी, तो सभी लोगों ने इस असुर के पास जाना ही बेहतर समझा। ऋषि अगस्त्य तीनों राजाओं संग निशाचर के राज्य पहुँचे। जहाँ

आतापी ने अपने मंत्रियों संग इनका आदर सत्कार किया। आतापी और वातापी ने आसुरी शक्तियों का चोला ओढ़कर महर्षि अगस्त्य को दावत का निमंत्रण दिया। महर्षि अगस्त्य भोजन के निमंत्रण पर उनके कक्ष में आ पहुँचे। उसने अपने छोटे भाई को उसी तरह से मारकर उसका स्वादिष्ट पकवान तैयार किया।

भोजन ग्रहण करने के बाद जब ऋषिवर उठने को थे, तभी आतापी ने महर्षि अगस्त्य के पेट में बैठे छोटे भाई को आवाज दी। वातापी... अरे ओ वातापी... बाहर आओ। इससे पहले कि आवाज सुनकर छोटा भाई पेट से बाहर निकलता, महर्षि अगस्त्य के पेट में कुछ हलचल हुई। उन्होंने अपने तपोबल से देखा, तो पता चला कि राक्षस पेट के भीतर ही मौजूद है। महर्षि ने तुरंत ही अपने कमण्डल से जल लिया, उसे बाहर छिड़क कर अपने पेट पर हाथ फेरा। आतापी की आवाज का कोई भी असर वहाँ नहीं हुआ। इसी प्रकार आतापी ने दोबारा से अपने भाई का नाम पुकारा। तब ऋषि अगस्त्य ने कहा कि तुम जिसे आवाज दे रहे हो, उसे तो मैं पचा गया हूँ। अब वह कैसे निकल सकता है। वातापी को मरा जानकर, आतापी ऋषि अगस्त्य के चरणों में गिर पडे और उनसे अपने

राज्य आने का कारण पूछा। तब अगस्त्य मुनि ने धन देने के लिए कहा। उसने तीनों राजाओं को गाय, घोड़े और बहुत सारा धन दिया। उससे भी ज्यादा धन, एक सोने के रथ के साथ ऋषि अगस्त्य को दिया। धन प्राप्ति के बाद तीनों राजा ऋषिवर के साथ रथ पर सवार होकर आश्रम की ओर निकल पड़े। आतापी, वातापी की मौत से दुखी था। बदला लेने के लिए वह अगस्त्य ऋषि को मारने उनके पीछे चल दिया। इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, अगस्त्य मुनि ने उसे अपनी हुँकार से ही खत्म कर दिया। इस तरह से महात्माओं को खा जाने वाले मायावी दैत्य आतापी और वातापी का खत्म हुआ।

अगस्त्य ऋषि ने ही विंध्याचल की पहाड़ी में से दक्षिण भारत में पहुँचने का सरल मार्ग बनाया था। यह भी कहा जाता है कि इन्होंने अपनी मंत्र शक्ति के बल पर विंध्याचल पर्वत को झुका दिया था। ऐसी मान्यता है कि अगस्त्य ऋषि का शिष्य विंध्याचल पर्वत था जो अपनी ऊँचाई पर बहुत घमंड करता था। और एक दिन कौतूहलवश उसने अपनी ऊँचाई इतनी बढा दी, जिस कारण सूर्य की रोशनी पृथ्वी पर पहुँचनी बन्द हो गई तथा प्राणियों में हाहाकार मच गया। तब सभी जन अगस्त्य ऋषि के पास गए और उनसे अपने शिष्य को समझाने की विनती करने लगे तब ऋषि अगस्त्य ने विंध्याचल पर्वत से कहा- मुझे दक्षिण की तरफ जाना है। अपनी ऊंचाई कम करो और जब तक मैं लौट के ना आऊं अपनी ऊँचाई ना बढ़ाना। विंध्याचल ने गुरु के आदेश का पालन किया और तबसे विंध्याचल की ऊँचाई स्थायी हो गयी। 'अगस्त्य संहिता' - भारत के ऋषियों ने धर्म के साथ ही विज्ञान का भी विकास किया था। उस काल में वायुयान होते थे, बिजली होती थी, अंतरिक्ष में सफर करने के लिए अंतरिक्ष यान भी होते थे। आज बहुत से लोग शायद इस पर विश्वास न करें लेकिन खोजकर्ताओं ने अब धीरे-धीरे इसे स्वीकार करना शुरू कर दिया है।

वैज्ञानिक ऋषियों के क्रम में महर्षि अगस्त्य भी एक वैदिक ऋषि थे। निश्चित ही आधुनिक युग में बिजली का

आविष्कार माइकल फैराडे ने किया था। बल्ब के अविष्कारक थॉमस एडिसन अपनी एक किताब में लिखते हैं कि एक रात मैं संस्कृत का एक वाक्य पढ़ते-पढ़ते सो गया। उस रात मुझे स्वप्न में संस्कृत के उस वचन का अर्थ और रहस्य समझ में आया जिससे मुझे बल्ब बनाने में मदद मिली।

ऋषि अगस्त्य ने 'अगस्त्य संहिता' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ की बहुत चर्चा होती है। इस ग्रंथ की प्राचीनता पर भी शोध हुए हैं और इसे सही पाया गया। इस ग्रंथ में विद्युत उत्पादन से संबंधित सूत्र मिलते हैं, विद्युत का उपयोग इलेक्ट्रोप्लेटिंग (Electroplating) के लिए करने का भी विवरण मिलता है। उन्होंने बैटरी द्वारा तांबा या सोना या चांदी पर पॉलिश चढ़ाने की विधि निकाली अतः अगस्त्य को कुंभोद्भव (Battery Bone) भी कहते हैं। इसके अलावा अगस्त्य ऋषि ने गुब्बारों को आकाश में उड़ाने और विमान को संचालित करने की तकनीक का भी उल्लेख किया है।

महर्षि अगस्त्य आश्रम :

महर्षि अगस्त्य के भारतवर्ष में अनेक आश्रम हैं। इनमें से कुछ मुख्य आश्रम उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र तथा आन्ध्रप्रदेश में हैं। एक उत्तराखण्ड के रुद्रप्रयाग जिले के अगस्त्य ऋषि नामक शहर में है। यहाँ महर्षि ने तप किया था तथा आतापी-वातापी नामक दो असुरों का वध किया था। वर्तमान में मुनि के आश्रम के स्थान पर एक मन्दिर है।

दूसरा आश्रम महाराष्ट्र के नागपुर जिले में है। यहाँ महर्षि ने रामायण काल में निवास किया था। गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से भगवान श्रीराम ने ऋषियों को सताने वाले असुरों का वध करने का प्रण लिया था। महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम को इस कार्य हेतु कभी समाप्त ने होने वाले तीरों वाला तरकश प्रदान किया था। एक आश्रम महाराष्ट्र के अहमदानगर जिले के अकोले में प्रवरा नदी के किनारे है। यहाँ महर्षि ने रामायण काल में निवास किया था। एक आश्रम आन्ध्रप्रदेश के तिरुपति में है।

ऋषि अगस्त्य के वंशजों को अगस्त्य वंशी कहा गया है। ऋग्वेद में इनका उल्लेख मिलता है। महर्षि अगस्त्य दक्षिणी चिकित्सा पद्धति 'सिद्ध वैद्यम्' के भी जनक हैं।

धर्म प्रचार :

महर्षि अगस्त्य भगवान शिव के अनुयाई थे और काशी विश्वनाथ के मंदिर में पूजा पाठ किया करते थे। इनके जीवन का लक्ष्य धर्म प्रचार करना था। शिव भक्त होने की वजह से धर्म प्रचार के लिए महा ऋषि अगस्त्य दक्षिण भारत चले गए। उस दौर में किसी ने विंध्याचल (विशालकाय जंगलों) को पार कर दक्षिण जाने का साहस नहीं किया था। वे हमेशा भगवान शिव के प्रचार प्रसार में लगे रहे।

महर्षि अगस्त्य ने यर्जुवेद का प्रचार किया, भाषाओं का संस्कार किया तथा मूर्ति कला का ज्ञान दिया। यहाँ धर्म, कला, संस्कृति, भाषा आदि का सशक्त प्रचार एवं स्थापना करने के बाद महर्षि अगस्त्य भारत से बाहर निकले। उन्होंने हिंदू धर्म का प्रचार-प्रसार पश्चिमी देशों में बहुतायत में और सबसे पहले किया था। महर्षि अगस्त्य भारत से बाहर सिन्ध एवं पश्चिमी देशों तक जाकर भारतीय संस्कृति एवं धर्म का प्रचार करने वाले लोगों में प्रथम व्यक्ति थे। भारत के बाहर महर्षि अगस्त्य समुद्री यात्रा करते हुए अनेकों देशों में हिंदू धर्म के प्रचार प्रसार के लिए जा पहुँचे। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में उनके विशिष्ट योगदान के लिए जावा, सुमात्रा आदि में इनकी पूजा की जाती है। कंबोडिया के शिलालेखों के अनुसार ब्राह्मण अगस्त्य आर्य देश के निवासी थे। कंबोडिया आकर उन्होंने भदेश्वर नामक शिवलिंग की पूजा अर्चना लंबे समय तक की। कंबोडिया में रहते हुए उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि महर्षि अगस्त्य कंबोडिया देश के आगे भी गये थे।

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन. सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

ऊन एरु सेल्वत्तु उडर् पिरवि यान् वेण्डेन्
आनेरु एळ् वेंड्रान अडिमै तिरम् अल्लाल्
कून् एरु संगम् इडत्तान् तन् वेंगडत्तु
कोनेरी वाळुम् कुरुगाय् पिरप्पेने।। (677)

कठिन शब्दार्थ - ऊन-शरीर, पिरवी-जन्म, अडिमै-दास, संगम-शंख, कोनेरी-एक तालाब, कुरुगु-सारस

भावार्थ - सुख और शांति की प्राप्ति कैसे मिलती है? सच, वे तो दूसरे की सेवा में मिलती हैं। दूसरे को सहायता करने मात्र से, निष्काम्य भाव से सहायता करने से जो सुख मिलता है वह सदा स्थाई रहता है। हम अपनी प्रार्थना में भगवान से यही माँग रखते हैं कि स्वस्थ, सुखी और धन-धान्य का जीवन मिले। लेकिन इस कविता में कुलशेखर आळ्वार इन सब को न माँगकर भगवान का दास बनने की कृपा माँगते हैं। वे प्रार्थना करते हैं, "यह शरीर अपने मांस से मोटा बनता जाता है। मुझे यह शरीर नहीं चाहिए। उसके बदले, नप्पिन्नै के लिए सातों बैलों को जीते तुम्हारी सेवा करने का मौका मिल जाए। इस तिरुवेंकट गिरि में पुष्करिणी नामक एक तालाब है, वहाँ मैं एक सारस पक्षी बनकर जीवन बिताना चाहता हूँ।"

मतलब यह है कि मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, लालच जैसी बुरी भावनाएँ भरी रहती हैं। परंतु चिडियों में

ऐसी बात नहीं। इसलिए संत कवि के मन में भगवान विष्णु का निवास स्थान तिरुवेंकट गिरि में सारस बनने की इच्छा पैदा हो गयी।

आनाद सेल्वत्तु अरम्बैयर्कळ् तर् सूळ
वानाळुम् सेल्वमुम् मण् अरसुम् यान् वेण्डेन्
तेन् आर् पूंञ्चोलै तिरुवेंगड सुनैयिल्
मीनाय् पिरक्कुम् वितियुडैयेन् आवेने।। (678)

कठिन शब्दार्थ - सेल्वम्-धन, अरम्बैयर-अप्सराएँ, वान-इंद्रलोक, मण्-पृथ्वी, सोलै-उपवन, मीन-मछली।

भावार्थ - लोग अपने अज्ञान के कारण विश्वास करते हैं कि सुख और संपत्ति से आनंद का जीवन मिलता है। इसलिए वे उस माया को पाने के लिए उसके पीछे पडे रहते हैं। इससे उनको कभी चैन का जीवन नहीं मिलता। इसलिए संत कवि भगवान विष्णु से प्रार्थना करते हैं, ''असीमित धन-संपत्ति सहित सुन्दर अप्सराओं के साथ सुख भोग से भरा इंद्र लोक पर का शासन और पृथ्वी पर का शासन मिलने पर भी ऐसा सुख और शासन मुझे नहीं चाहिए। मधु से भरे फूलों के उपवन से घेरा तिरुवेंकट गिरि में होने वाले जलाशय में एक मछली बनकर जन्म लेना चाहता हूँ।''

मतलब यह है कि शासन और संपत्ति से मिलने वाला सुख क्षण भंगुर है। परंतु भगवान के दर्शन से मिलने वाला सुख स्थाई है। इसलिए संत कवि स्थाई सुख देने वाला तिरुवेंकट गिरि के जलाशय में मछली बनकर रहना चाहते हैं।

पिन्निट्ट सडैयानुम् पिरमनुम् इंदिरनुम्
तुन्निट्टु पुगल् अरिय वैगुन्द नीळ् वासल्
मिन् वट्ट सुडर् आळी वेंगडक्कोन् तान् उमिळुम्
पोन् वट्टिल् पिडित्तु उजने पुगळ् पेरुवेन् आवेने।। (679)

कठिन शब्दार्थ - सडैयन-भगवान शिव, पिरमनम-ब्रह्म, वासल-द्वार, सुडर आळी-चमकता चक्र, उमिळुम्-थूकना, वट्टिल-थूकदान।

भावार्थ - भगवान की छाया में मिलने वाला आनंद असीमित है। उसे पाने के लिए अनेक देवगण भी भगवान विष्णु के धाम में आते हैं। इसलिए संत कवि अपनी इच्छा को प्रकट करते हुए कहते हैं, ''जटाधारी भगवान शिव, ब्रह्म, इंद्र आदि तुम्हारे दर्शन पाने के लिए वैकुंठ में आकर खडे हैं। तुम अपने हाथ में चमकते सुदर्शन चक्र को धारण करके रखे हो। हे तिरुवेंकट गिरि के नाथ! जब तुम थूकते हो तब मैं उसे लेने के लिए सोने से बना थूकदान हाथ में लेकर सदा तुम्हारे साथ ही हर जगह चलना चाहता हूँ।''

मतलब यह है कि संत कवि की इच्छा है कि वे सदा भगवान विष्णु के निकट ही रहना चाहते हैं। इसलिए सोने से बने थूकदान को लेकर चलने वाले दास बन जाएँ तो निर्बाध उनके साथ हर जगह जा सकते हैं और हर समय उनके दर्शन पा सकते हैं। इसलिए वे सोने का थूकदान उठाने वाले दास बनना चाहते हैं।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
ॐ नमो नारायणाय।

श्री गुरुभ्यो नमः

हम श्रीकृष्ण परमात्मा द्वारा किए गए गीतामृत को साक्षात वेद स्वरूप मानते आए हैं। वेद या श्रीमद्भगवद्गीता यह दोनों ही मानव को कर्तव्य बोध कराने वाले ग्रंथ हैं ऐसा हमने समझ लिया। किसी एक ग्रंथ का अध्ययन करने से पूर्व, एक उपदेश सुनने से पूर्व वह प्रदेश ग्रहण करने के लिए वह ग्रंथ अध्ययन करने के लिए कौन योग्य है इसका निर्णय होना चाहिए। ऐसा होने पर ही हम उस ग्रंथ द्वारा उस उपदेश को ग्रहण करने के अधिकारी हैं। ऐसा विवरण शास्त्र ग्रंथों में विस्तारपूर्वक कर पाएगा। तब श्रीमद्भगवद्गीता के इस गीतामृतोपदेश का अध्ययन करने का अधिकारी कौन ऐसा विचार आने पर एक बार इतिहास देख ले, देखने पर पता चलेगा प्राथमिक रूप से सुनने वाले अर्जुन थे। क्योंकि परमात्मा अर्जुन के लिए ही यह उपदेश दिया था। केवल अर्जुन ही नहीं इस गीतामृत को रथ के ध्वज पर विराजमान श्री हनुमान जी ने भी सुना था। वह भी प्रत्यक्ष रूप से सुना था। इतना ही नहीं परमात्मा की सारी लीलाएँ मुख्य रूप से योग नेत्रों से देखते हुए वेदव्यास जी भी स्वच्छंद रूप से सुन रहे थे। वह वेदव्यास महर्षि के अनुग्रह से भगवान के उपदेश को सुनने की योग्यता संजय ने पाई। उस संजय द्वारा धृतराष्ट्र ने भी उपदेश सुना। इसलिए एक ही उपदेश को इतने लोग ने सुना। यह हमारा इतिहास है।

इतना ही नहीं कई महर्षियों कई सिद्धियों कई योगी-महर्षि परमात्मा की लील विनोद को देखते-देखते उपदेश कब देंगे कब देंगे इस की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह भी सूक्ष्म रूप से सुनने आए। इसीलिए उपदेश काल में ही कईयों ने इस उपदेश को संग्रहित किया। इसीलिए केवल अर्जुन को दृष्टि में रख कर दिया गया उपदेश नहीं है। तब जिसने सुना उपदेश उसी को दिया गया होगा ना, ऐसा नहीं है वह सुनने वालों को चुनने में परमात्मा ने बहुत ही निपुणता दर्शाई है। ऐसा हमें प्रतीत हो रहा है। इसमें पहले सुनने वाले अर्जुन। वे योद्धा और परमात्मा के अति प्रिय परमात्मा जिस तरह की प्रीति चाहिए हर प्रकार अर्जुन ने प्राप्त की। वह उनके भक्त, सखा, मित्र, बंधु भी हैं। इसलिए उन्हें हटा कर दूसरे सुनने वाले ध्वज पर विराजमान हनुमानजी वे परम भक्त हैं। तब भक्तजन सुन सकते हैं। यह एक वर्ग परमात्मा ने

बनाया। इतना ही नहीं वेदव्यास महर्षि ने सुना। वे महान तत्त्व ज्ञानी थे। अर्थात् तत्त्व ज्ञानी भी इसे सुन सकते हैं। अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। इसीलिए ऐसा भी एक वर्ग हो परमात्मा ने सूचित किया। तत्त्वज्ञान नहीं है, भक्ति नहीं है, अर्जुन की तरह योग्यता नहीं है, हमें भगवद्गीता की आवश्यकता नही है। ऐसा कहने वालों के लिए और दो पात्रों को प्रवेश करवाया गया। वे थे संजय और धृतराष्ट्र।

संजय सामान्य नाथ इंद्रियों पर निग्रह के लिए प्रयत्नशील कुछ ऊपर जाकर तत्त्व ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है इसका प्रयत्न करने वालों में वे एक थे। आशावादी थे। ऐसे संजय ने भी इस गीतामृत को सुनाने से परमात्मा साधारण साधक गण भी इसे सुन सकते हैं इसकी सूचना दे रहे हैं। इतना ही नहीं अंत में अंधे भी जिसमें किसी भी प्रकार के सद्गुण हमें दिखाएँ ना पड़ते हो ऐसे पुत्रव्यामोह में छटपटाता है। केवल चर्म चक्षू ही नहीं मानसिक चक्षुओं का लोप होने वाला धृतराष्ट्र को भी सुनाया गया। किसी भी प्रकार की योग्यताएँ ना रखने वाला भी इस उपदेश को सुनना ही पड़ेगा। सारी मानव जाति को यह उपदेश पहुँचाना चाहिए ऐसा महात्मा ने इस तरह हमें सूचना दी। एक और प्रकार से सोचने पर संजय सेवक है, सेवा वृत्ति में रहने वाले हैं, ऐसी सेवा वृत्ति में रहने वाले सुनने वाले ग्रास रूट मैनेजमेंट (निम्न स्तर के लोग) हैं। ऐसे मध्य स्थाई के रहने वालों को भी भगवद्गीता काम करती है बताया गया है। ऐसे पता चल रहा है। इस तरह देखा जाए तो धृतराष्ट्र उच्च स्थान पर आसीन है। राजा की तरह उस उच्च स्थान में रहने वालों को भी यह भगवद्गीतामृत उपयोगी है। इन तीनों के द्वारा एक और प्रकार से सूचित कर रहे हैं। ऐसे हम किसी भी प्रकार सोचे, किसी भी स्थान पर हम, किसी भी हाल में प्रवेश करते हैं।

प्रवेश करने पर हमें भी उस भगवद्गीतामृत पाने की योग्यता परिपूर्ण से रहती है। परंतु किस स्थान पर प्रवेश किया जाए किस विभाग में प्रवेश हो यह प्रथम संदेह ना होकर अर्जुन के विभाग में ही प्रवेश हो। अर्जुन की विशिष्टता क्या है देखने पर परमात्मा द्वारा उन्होंने साक्षात उपदेश पाने की योग्यता कमी कभी कि मरीचि, प्रजापति, सनकादियों को प्राप्त थी। पुनः बीच में किसी को प्राप्त हुआ ऐसा नहीं लगता। बीच में प्राप्त होती तो विवस्वंत को ऐसे लोगों को प्राप्त हुई। उस परमात्मा के संदेश को प्राप्त करने की योग्यता अर्जुन को ही है। इसलिए हम उस योग्यता के लिए प्रयत्न करें। परमात्मा उपदेश देने स्वयं प्रत्यक्ष रूप में यहाँ नहीं आएँगे। इसलिए कलियुग में रहने वाले मानवों को प्रत्यक्ष हो तो किस प्रकार की इच्छाओं को व्यक्त करेंगे यह परमात्मा को भलीभाँति पता है इसीलिए वे (अपने देह में होने सा) इस देह में परमात्मा प्रत्यक्ष रूप में है। वह परमात्मा और अर्चावतारी मूर्ति की तरह उनके संकल्प में इस उपदेशामृत को ग्रहण करेंगे। ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक बनाएँ। केवल ये महाराजा लोग ही योग्य हैं क्या कोई और योग्य नहीं है? क्या बाकी सभी लोग परमात्मा के अनुग्रह के पात्र नहीं है क्या? कहने पर बहुत से राजा बहुत से वीर बहुत योद्धा परमात्मा के अनुग्रह के पात्र हुए हैं। परमात्मा के अनुग्रह के पात्र बनने के लिए अपने स्वकर्तव्य का निर्वाह करें। वे कर्तव्य पालन परिपूर्ण रूप से करने का संकल्प ले कर रहे हैं। ऐसों पर ही परमात्मा का अनुग्रह पूर्ण रूप से होता है।

श्रीमद्भगवद्गीतामृत परमात्मा ने कुछ लोगों के नाम कहीं-कहीं रखने पर उन पर उन की असीम कृपा होने की सूचना मिल रही है। वे दुर्योधन के मुख्य द्वारा हमें सुनवा रहे हैं। वह दुर्योधन ऐसे सतवीर और सत्पुरुषों पर ईर्ष्या रखता है। इसलिए दुष्परिणाम निकलते हैं। यह हमें बताने के लिए कुछ सत्पुरुषों के नाम दुर्योधन के मुख्य द्वारा बुलाया जा रहा है। उस सत्पुरुषों के नाम इस श्लोक द्वारा जान लेंगे। चौथे श्लोक में दुर्योधन द्रोणाचार्य के पास जाने की बात हम हमें पता ही है। जाकर गुरु को अपमानित कर साथ ही साथ वहाँ उपस्थित कुछ और वीरों से भी अपमानजनक बातें कर रहा था।

क्रमशः

भारतीय संस्कृति में तीर्थों का अप्रतिम स्थान है। भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग मानेजानेवाले शास्त्रों में तीर्थों की महिमा का पूर्ण रूप से और मुक्तकंठ से गायन किया गया है। शास्त्रों में कहा गया है--

श्रीतीर्थपान्थरजसा विरजीभवन्ती,
तीर्थेषु ब्रंभमणतो न भवे भ्रमन्ति।

द्रव्यव्ययादिह नराः स्थिरसंपदः स्युः

पूज्या भवन्ति जगदीशमथार्चयन्तः।।

अर्थ : तीर्थ मार्ग और तीर्थ स्थल की रज शिर पर लगाने से तीर्थ स्थल की श्रद्धा के साथ यात्रा का पुण्य फल प्राप्त होता है। साथ ही मनुष्य आवागमन के चक्कर से मुक्त होकर मुक्ति प्राप्त कर सकता है। तीर्थयात्रा में धन दौलत का दान के रूप में खर्च करने से हमारे जीवन में स्थिर लक्ष्मी और संपत्ति वाला बन जाता है। इस के अतिरिक्त तीर्थ में पूजा-अर्चना करने से मनुष्य समाज में पूजनीय होता है। राजस्थान का तीर्थराज आबु से सटा हुआ यह जालोर जिला का क्षेत्र भी अनेक तीर्थों से भरपूर है, जिनमें ''श्री सूंधामाता तीर्थ'' शीर्षस्थ स्थान रखता है।

तीर्थ स्थल का स्थान

यह प्राचीन पावन तीर्थ राजस्थान के जालोर जिले की भीनमाल तहसील की जसवंतपुरा पंचायत समिति के सूंधा पर्वत पर स्थित है। यह भीनमाल से 24 मील, रानीवाडा से 24 मील तथा जसवंतपुरा से 8 मील दूरी पर है।

रेल तथा बस मार्ग द्वारा सूंधामाता तीर्थ पहुँचना :

मालवाडा-सिरोही एवं भीनमाल-जसवंतपुरा सडक मार्ग पर स्थित इस तीर्थ पर पहुँचने के लिए यात्रियों को

हमारे मंदिर

राजस्थान का शिर्ष तीर्थ श्री सूँधामाता

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालीया, मोबाइल - 9825113636

पश्चिमी रेल-पथ के दिल्ली-अहमदाबाद मार्ग पर सिरोही रोड या आबुरोड पर उतरना पडता है, और उतरी रेल के यात्रियों को जोधपुर-भीलडी मार्ग पर भीनमाल या मालवाडा स्टेशन पर उतरना पडता है। यहाँ से फिर बस द्वारा सूंधा यात्रा स्थान पहुँचना होता है।

इस तीर्थ के लिए अब राजस्थान में आबुरोड, मालवाडा, सिरोही, जसवंतपुरा, भीनमाल, रामसीन, जोधपुर और गुजरात में अहमदाबाद और भावनगर से ''सूंधामाता'' तीर्थ के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। सभी यात्रियों को दाँतलावास अथवा राजपुरा होकर तलहटी तक पहुँच कर फिर सूंधामाता पर्वत पर चढ़ना पडता है।

दाँतलावास गाँव से चढ़ाई :

यहाँ उतरकर यात्री श्री अंबिका विश्राम गृह में कुछ समय विश्राम लेकर चढ़ाई प्रारंभ करते हैं। चढ़ाई कही सीधी, तो कही सरल। पर यह मार्ग सुगम है।

राजपुरा गाँव से चढ़ाई :

पहले यहाँ उतर कर यात्री श्री जीवाणी विश्राम-गृह में विश्राम लेकर 1.5 कि.मी. सागी नदी तट पार करके चढ़ाई प्रारंभ करते हैं।

रोप-वे से चढ़ाई :

यहाँ रोप-वे की सुविधा भी उपलब्ध है। इसे श्री सूँधामाता रोप-वे प्रा.लि. कोलकाता संचालित करती है। बच्चों, अशक्त और बुजुर्ग के लिए तो यह वरदान स्वरूप है। इस आकाश मार्गीय आवागमन का आनंद भी अद्भुत और अनूठा है।

सूँधा पर्वत नामकरण

लोक-भाषा में इसे सूँधा पर्वत कहा जाता है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक ग्रंथों में इसके सुगन्धाद्रि, सौगंन्धिक

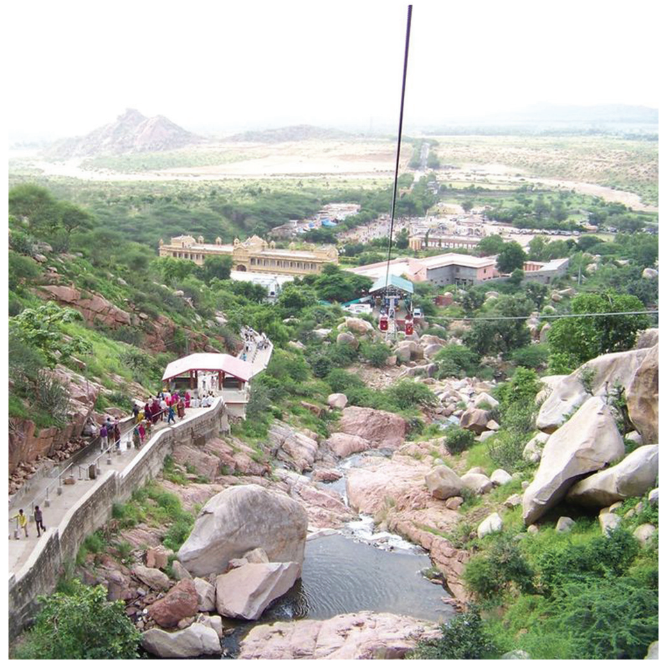

नाम उपलब्ध होते हैं। आशुतोष शंकर की जटाओ सा विस्तार लिये इस पर्वत में सात श्रेणियाँ असमानानंतर क्रम में हैं और इस कारण इसे ''सतपुडा'' भी कहते हैं।

सूँधा पर्वत का इतिहास

यह सौगन्धिक पर्वत पौराणिक पुण्य स्थल है।

श्री माल माहात्म्य एवं वहाँ प्राप्त शिलालेखों के अनुसार यहाँ विभिन्न देवी देवताओं ने प्रकट होकर अपने चरण कमलों से इसे पवित्र किया और ऋषि-मुनियों ने तपस्या कर सिद्धियाँ प्राप्त कीं। इस पर्वत पर सनातन धर्म की ध्वजा फहराई।

आदिदेव शिव जी ने त्रिपुर नामक असुर का वध करने हेतु यहाँ तप किया था। यह बात साक्षात शिव जी ने गौतम मुनि को बताया और उनके समक्ष शिवजी प्रकट हुए और वह लिंग स्वरूप 'भूर्भुवः स्वेश्वर' नाम से विख्यात हुआ। जगत-जननी आद्यशक्ति तो इस पर्वत पर भुवनेश्वरी, अधघटेश्वरी, चामुंडा, बंधुदेवी, दान्ता देवी आदि नामों से यहाँ सर्वत्र विराजमान है ही। पहले यहाँ भरद्वाज मुनि का आश्रम था। वशिष्ठ मुनि की पत्नी

अरुन्धती और सप्तर्षि के साथ यहा पधारी थी और उस समय नारद मुनि भी यहाँ पधारे थे। यहीं पवित्र पर्वत स्थल पर माँ आद्यशक्ति चामुंडा सूँधामाता के नाम से विराजित हैं।

मंदिर वर्णन

इस सौगन्धिक पर्वत की रमणीय एवं सुरम्य घाटी में सागी नदी से लगभग 40-45 फुट ऊँची एक प्राचीन सुरंग से जुडी गुफा में "भूर्भुवः स्वेश्वर और अधघटेश्वरी चामुंडा" युगों से विराजमान हैं। यहाँ लगे शिलालेखों के अनुसार जालोर के चौहान नरेश चाचिगदेव ने इस गुफा तक उंची कुर्सी उठाकर उस पर मंडप बनवाया और संवत 1316 की अक्षय तृतीया को देवी की प्रतिष्ठा की। अति रमणीय नैसर्गिक सौन्दर्य के बीच यह गगनचुंबी शिखरयुक्त विशाल मंदिर समुद्री धरातल से 509 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। मंदिर के पीछे आया शिखर समुद्र धरातल से 688 मीटर ऊँचा है। संपूर्ण मंदिर संगमरमर से निर्मित है।

सूँधा पर्वत पर स्थित अन्य तीर्थ स्थल

(1) नागिनी तीर्थ, (2) दान्तादेवी और वाक्पति सरोवर, (3) द्वादश शिवलिंग और इसके अलावा यहाँ पर अन्य तीर्थ स्थल भी हैं।

विशेष रूप से इस पर्वत पर अन्य पवित्र शिव स्थल

(1) श्री भूर्भुवः स्वेश्वर, (2) श्री माहेश्वर, (3) श्री चांपेश्वर, (4) श्री पातालेश्वर, (5) श्री खोडेश्वर, (6) श्री देवेश्वर, (7) श्री भुतेश्वर, (8) श्री दुधेश्वर, (9) श्री नीलकंठ, (10) श्री दुधेश्वर, (11) श्री सांगेश्वर, (12) श्री देवडादेव।

सूँधा पर्वत पर श्री चामुंडा माता सेवा-संस्थान

इस तीर्थ की संचालन-व्यवस्था इस सेवा संस्थान के हाथ में है।

धर्मशाला

यहा अनेक ज्ञाति और समाज ने अपने समाज और अन्य यात्रियों के लिए अनेक धर्मशालाएँ बनाई हैं। यात्री अपने इच्छानुसार यहाँ ठहर सकते हैं। आवास निःशुल्क है।

चामुंडा भोजनालय

प्रायः यात्री-गण अपने इच्छानुसार अपना भोजन धर्मशाला में पका सकते हैं। ऐसा नहीं कर सकते हैं तो सभी यात्रियों के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजनालया की सामान्य शुल्क पर सुविधा उपलब्ध है। यहा अग्रिम आदेश देकर मन पसंद भोजन भी तैयार करवाया जा सकता है। प्रसाद के लिए दुकान और होटल सुविधा भी उपलब्ध है।

बरतन-बिस्तर भंडार

यहाँ यात्रियों को अपना भोजन बनाने के लिए निःशुल्क बरतन सेवा उपलब्ध है, और साधारण शुल्क से बिस्तर सुविधा भी उपलब्ध है।

इस तरह इस पवित्र स्थल सूँधामाता देवस्थान में पूरे वर्ष भर अनेक उत्सव भी मनाये जाते हैं और वर्ष भर में पूरे देश भर से यहाँ यात्रियों की भीड बनी रहती है। जो भी श्रद्धालु यहाँ दर्शन और यात्रा हेतु पधारते हैं, माँ आद्यशक्ति चामुंडा (सूँधामाता) उनकी हर मनोकामना की पूर्ति करती हैं।

सुगंधाद्री पर्वत की राजराजेश्वरी माँ सूँधामाता को कोटी-कोटी प्रणाम करके इस कथा को विराम देता हूँ।

ॐ ए ह्रीम क्लीं चामुंडा विच्चे।

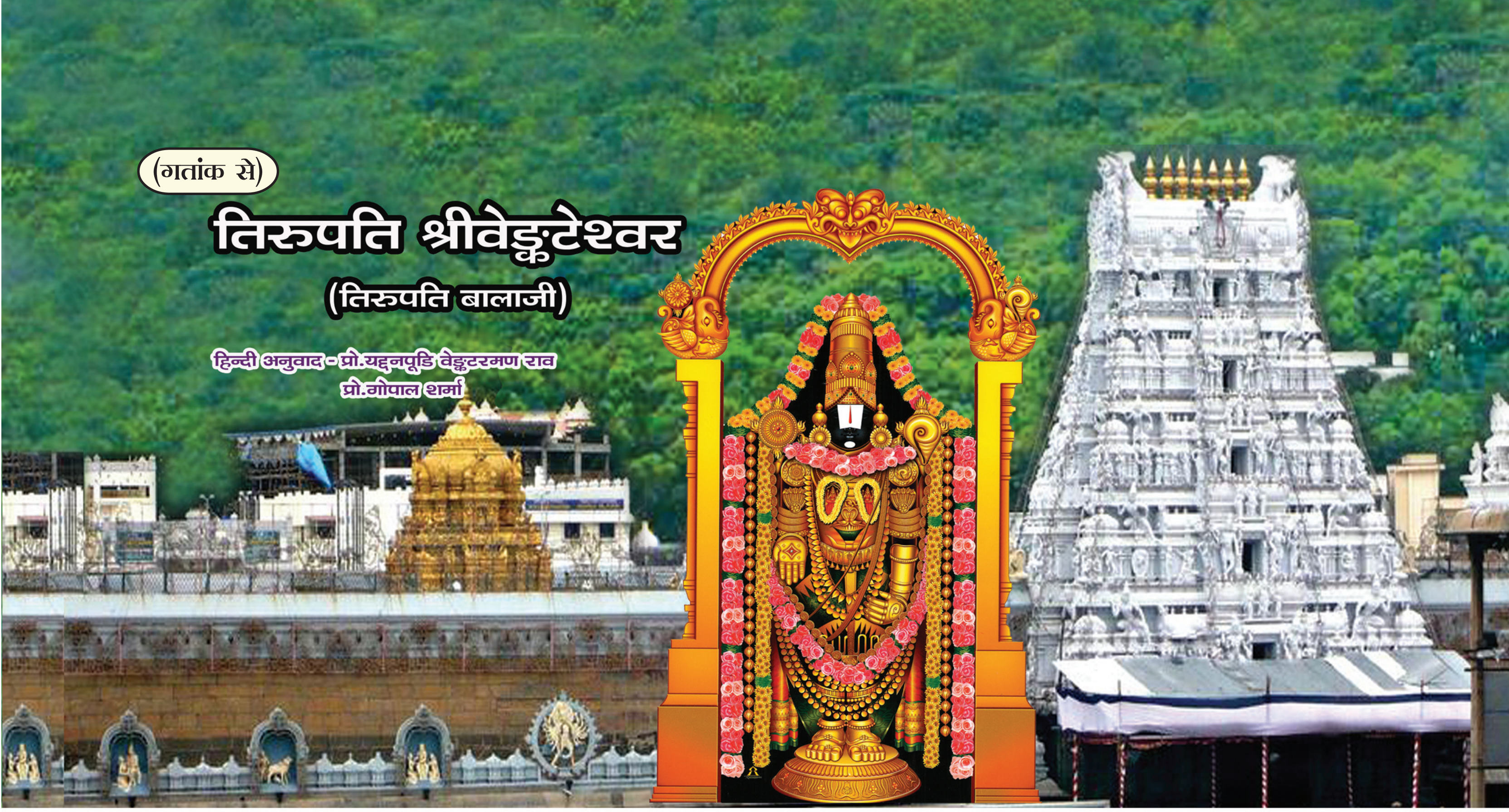

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

6. विरजा तीर्थम्

यह छोटा तीर्थ है। स्वामी मंदिर के संपंगि प्रदक्षिणा में (दूसरे प्राकार में) स्थित है। प्रवेश द्वार के पास स्थित खाद्य-भाण्डागार की वायुव्य दिशा में एक कोने में है। विश्वास है कि वैकुण्ठ की विरजा नदी का पवित्र जल श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान के पाद पद्मों को छूता हुआ बह यहाँ आता है। यह प्राकार से पत्थर का कठोह है। तीर्थ के फैलाव को रोकने के प्रयास में सीस लोह को पिघालकर बीच में डालकर किया गया है। यहाँ का जल अत्यंत पवित्र माना जाता है।

7. आकाशगंगा तीर्थम्

यह मंदिर की उत्तर दिशा में दो मील की दूरी पर है। कहा जाता है कि इस तीर्थ पर अंजनादेवी ने बारह वर्ष पर्यन्त तपस्या की थी। यह त्रेतायुग की घटना थी। उन्होंने तपस्या फलस्वरूप हनुमान को पुत्र के रूप में पाया था। इस तीर्थ का जल महिमा संपन्न है।

प्राचीन काल में रामानुज नामक एक ब्राह्मण ने यहाँ पवित्र मन से तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शंख-चक्र धारी श्रीविष्णु लक्ष्मी समेत प्रत्यक्ष हुए और उस ब्राह्मण को आशीर्वाद देते हुए कहा- ''जो इस तीर्थ में, मेष मास में (चैत्र के महीने में) पूर्णिमा तिथि पर पवित्र स्नान करेगा उसे सुख जीवन की प्राप्ति होगी। इसके लिए चित्ता नक्षत्र का समय अत्यंत श्रेष्ठ है। इस समय पर पवित्र स्नान करने से पुनर्जन्म नहीं होगा। जो ऐसा करेगा, वह जीवन भर पवित्र रहकर अंत में भगवान को प्राप्त करेगा।'' (स्कंद पु. भाग - 1, अ.11, श्लो. 2 - 33)

(स्नान के लिए पवित्र दिन और समय का निर्देश वरा. पु. भाग - 2, अ. I, श्लो. 68 - 69 में है।)

एक बार एक धार्मिक तथा स्वाध्यायी ब्राह्मण ने एक और स्वाध्यायी धार्मिक ब्राह्मण को अपने पिताजी के श्राद्ध में भोक्ता के रूप में बुलाया। श्राद्ध भोज के पश्चात् तथा श्राद्ध कर्म की समाप्ति के तुरंत बाद यजमान का मुँह गंधे के मुँह का जैसा दिखाई पडने लगा। यजमान ब्राह्मण परेशान हो गया। यह ब्राह्मण गोदावरी नदी तट का निवासी थे। सुवर्णमुखी नदी के किनारे आश्रम में रहनेवाले अगस्त्य ऋषि ने कहा कि यह सब संतानहीन ब्राह्मण को श्राद्ध में भोक्ता के रूप में बुलाने का फल है। निदान पूछा गया। तब अगस्त्य जी ने बताया कि जाकर आकाश गंगा तीर्थ में

पवित्र स्नान करोगे तो तुम्हारा विकृत आकार दूर होगा, तुम पूर्ववत बन जाओगे। ऋषि के आदेश के अनुसार यजमान ब्राह्मण ने आकाश गंगा (तीर्थ) में स्नान किया और अपना पूर्व स्वरूप पाया। (स्कंद पु. भाग - 1, अ. 12, श्लो. 25 - 56)

भगवान बालाजी वेङ्कटेश्वर के अभिषेक के लिए हर दिन आकाश गंगा तीर्थ को तीन चाँदी के घडों में लाया जाता है। यह कार्य सात आचार्य पुरुषों के परिवार के सदस्यों से संपन्न किया जाता है। ये ही भगवान के मूल विराट के सामने ''मंत्र - पुष्पम्'' का पठन करते हैं। यह नित्य कर्तव्य है और पवित्र मन से किया जाता है। ये आचार्य तिरुमल नंबि के वंशज हैं। तिरुमल नंबि वैष्णव आचार्य नादमुनि के पौत्र और रामानुजाचार्य के मामा थे। रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं। इनका समय 11वीं सदी है। इतना ही नहीं, वाल्मीकि रामायण के निगूढ़ अर्थ का निरूपण इन्होंने किया था। तिरुमल नंबि अपने दादाजी आलवंदार की प्रेरणा से वेङ्कटाचल सपरिवार आये। उनके साथ उनकी दो अविवाहिता बहिनें भी आयीं थी। इनमें से एक का विवाह आचार्य रामानुजजी के पुत्र केशव सोमयाजी के साथ संपन्न हुआ। केशव सोमयाजी मद्रास (चेन्नै) के पास के श्रीपेरुंबदूर में रहते थे। तिरुमल नंबि ने श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान की पूजादि में उपयोग के लिए एक फूल का बगीचा भी लगाया। वेङ्कटेश्वर भगवान के नित्याभिषेक के लिए पापविनाशन तीर्थ से जल लाकर देते रहे। पापविनाशन तीर्थ बालाजी के मंदिर की उत्तर दिशा में लगभग तीन मील की दूरी पर है। भगवान की पवित्र सेवा में ही अपना समस्त जीवन बितानेवाले जब बूढे हुए तो आकाशगंगा तीर्थ से जल लाने लगे। आकाशगंगा तीर्थ, पापविनाशनम् तीर्थ से कम दूरी पर है। इस परंपरा को तिरुमल नंबि के परिवार के आचार्य आज भी निभा रहे हैं।

8. पापविनाशन तीर्थम्

यह तीर्थ भगवान के मंदिर से तीन मील की दूरी पर, उत्तर की दिशा में स्थित है। इस तीर्थ का पवित्र स्नान अत्यंत शुभकर है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र युक्त शुक्ल सप्तमी का दिन इसके लिए परमश्रेष्ठ माना जाता है। अगर वह तिथि रविवार को पडी तो परमाति पवित्र है। इसी प्रकार उत्तराभाद्रा नक्षत्र युक्त शुक्ल पक्ष का द्वादशी दिन भी परम श्रेष्ठ है। इसके साथ-साथ आश्वयुज मास के रविवार का दिन भी उतना ही श्रेष्ठ माना जाता है। इस दिन पर तीर्थ स्नान सकल पापों को धोने की शक्ति रखता है। उक्त दिनों में पवित्र स्नान करते समय अगर शालग्राम की प्राप्ति हो तो उस स्नान को अत्यंत प्रभावशाली और लाभकर माना जाता है। (ब्रह्म पु. अ. 4, श्लो. 24 - 25)

वैशाख मास के पुष्या नक्षत्र अथवा हस्ता नक्षत्र युक्त रविवार का दिन भी पवित्र स्नान के लिए श्रेष्ठ माना गया है। (वरा. पु. भाग - 2, अ. - 1, श्लो. 72 - 73)

क्रमशः

(गतांक से)

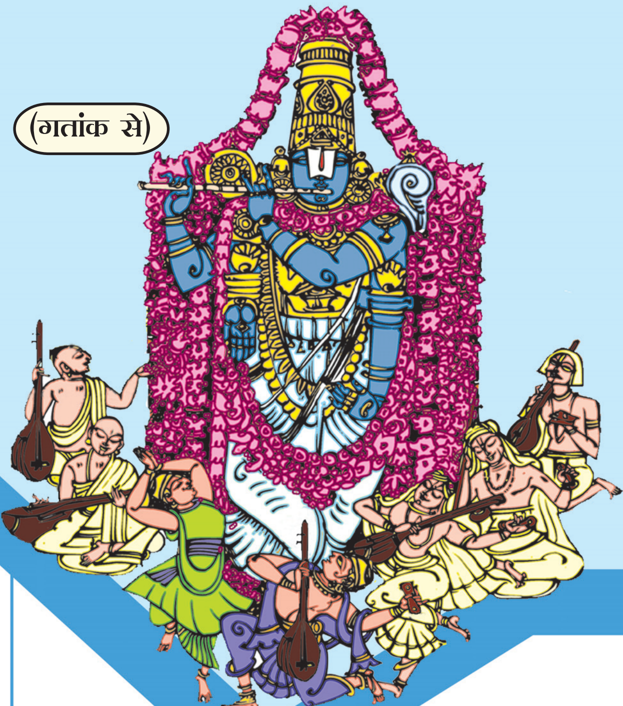

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - 9490924618

कनकदास की कृतियों में श्रीवेंकटेश्वरस्वामी का वर्णन (उल्लेख) :

श्री कनकदास कन्नड भाषा में ''कागिनेले यादिकेशव'' नाम से कई संकीर्तनों को समर्पित करके, 'मोहन तरंगिणी', 'नलचरित्र', 'हरिभक्तसार' नामक ग्रन्थों की रचना करके, व्यासराय जी से दिव्यशिक्षा प्राप्त करके, श्रेष्ठ हरिदास बने। वे यमांश संभूत हैं, यह बात आप्तवाक्य प्रामाणिक से विदित होता है।

(ता जंभारिए कनकनु-मध्वपति विठलदासु) इनके कीर्तन 'मुंडिगेगलु' नाम से प्रसिद्ध हैं।

- *नम्मम्मा शारदे उमामहेश्वरी,*
- *इष्टुदिना ई वैकुण्ठ एष्टु दूरवो,*
- *एसु कायंगल नलिदु एंबत्तु नाल्कु लक्षा जीवरासि यन्नु*
- *मुट्टा बेडमुट्टबेडा*
- *परम पुरुष नी नेल्लिकाइ*
- *भजसि बदुकेलो मानव*
- *तल्लनि सदिरुकांड्य तालुमनले...* आदि श्री कनकदास की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

इतिहास से पता चलता है कि स्वयं भगवान श्रीनिवास, कनकदास जी की सपने में आकर, अपने ब्रह्मोत्सव में आने के लिए निमंत्रण दिया। श्रीनिवास के निर्देश का पालन करते हुए, उस समय के (महन्त) देवस्थान के अधिकारी लोग, कनकदास जी का स्वागत करने के लिए पहाडी से नीचे उतरकर, उनके सामने गए, पर उन्हें न पहचान कर, उन्हीं से पूछा कि वे कौन थे? इस पर कनकदास ने उत्तर दिया कि- ''आगे जानेवालों के पीछे-पीछे आनेवालों के आगे''। विनयपूर्ण, स्वाभिमानी, उदार चरितवाले कनकदास भगवान का स्मरण करते हुए पहाड पर पहुँचकर, सर्दी से कांपते, भूख्य से तडपते हुए, अंधेरे में सोते समय, एक आजानुबाहु वहाँ आकर उन्हें प्रसाद तथा ओढ़ने के लिए रेशमीवस्त्र देकर चला गया। ऐतिहासिक आख्यान के अनुसार कनकदास की परमभक्ति की स्तुति में उडिपि के भगवान श्रीकृष्ण पश्चिमाभिमुखी हो गए। इस महापुरुष द्वारा भगवान श्रीनिवास को गाई गयी लोरी बहुत लोकप्रिय है। यह गीत ज्यादातर मंदिरों में रात के समय 'एकांत सेवा' के दौरान गाया जाता है। अद्भुत चरणों वाली इस लोरी का मुखडा...

''लालि पावन चरण लालि अघहरण।
लालि वेंकट रमणललित कल्याण।।
नरमृगाकारि हिरण्य कनवैरि।
करिराज रक्षक कारुण्यमूर्ति।
हरि आदि केशव गुरु अप्रमेय।
सिरिधर शेषगिरि वन तिम्मराय।।''

कनकदास द्वारा लिखित कृतियों में वाज्यनिंदास्तुति से संबंधित ''बंदेवय्या गोविन्द शेट्टी'' नामक गीत भी प्रसिद्ध गीत है। 'एनेंदु कोंडाडि स्तुति सलोदेव' नामक भजन में वे कहते है। 'तिरुपतियवास श्रीवेंकटेशनु नीनु स्मरिसि निन्नयनाम बदुकुवनुनानु। बिरुदुल्लवनु निनु मोरे हुक्कवनुनानु। सिरियादि केशवने नीनु।' (तिरुपति के निवासी श्री वेंकटेश आपकी क्या प्रशंसा करूँ, मैं वह हूँ जो आपको याद करता हुआ जी रहा हूँ।)

'मुट्टाबेडा' नामक भजन में वे कहते हैं - 'सिरि राम मंत्र सदा जपि सुत मोददलि। तिरुपति यात्रेय माडुव माहात्मरमुट्टबेड' राम मंत्र का जाप करने वाले तथा तिरुपति की यात्रा करनेवालों को मत छुओ, ऐसा यम ने आदेश दिया विषय को किर्तन में प्रस्तुत किया है।

श्री विजयदास की कृतियों में वेंकटाचलाधीश :

आप्तवाक्य प्रामाणिकता से यह विषय ज्ञात होता है कि वेंकटेश्वरस्वामीजी के आंतरिक भक्तों में एक माने जानेवाले श्री विजयदास भृगुवंश संभूत के थे।

''मोदलु ऋषिगळु कूडि सत्रयागव
नाकनदिय तीरदि रचिसलु।
पदुम संभवनंक भव बंदु
मुनि वृंद हृदय संशय हिडिसलु।
विधिविष्णु शिवरोळगे उत्तमरतिळियदे
मदड भावन नैदलू
ओदगि भृगुमुनि बंदुसर्वेश वैकुंठ सदन
नेंदरुहि दवरो इवरो।।''

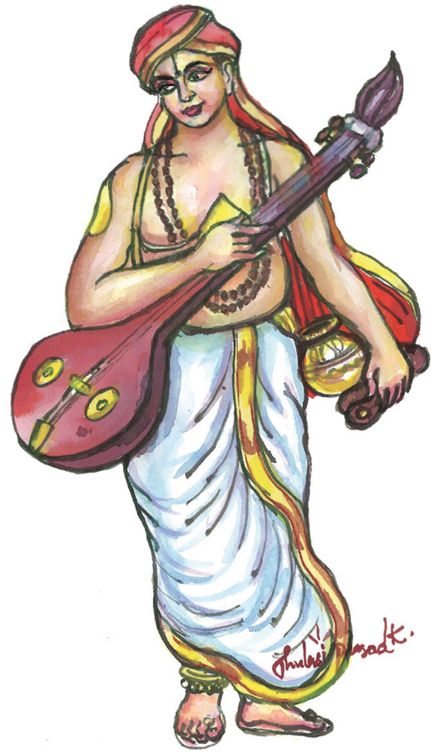

''विजयरायरा पाद भजिसि दवगनवरत विजय वागुवुदक्के संदेहवे''। गंगानदी के तट पर कश्यपादि ऋषियों द्वारा यज्ञ करते समय, भगवान नारद ने आकर पूछा कि- इस यज्ञ का फल किस भगवान समर्पित किया जायेगा। तो ऋषियों को संदेह होने लगा कि इस यज्ञ का फल किस श्रेष्ठ भगवान को अर्पित करना चाहिए। त्रिमूर्तियों में कौन श्रेष्ठ हैं, इसका परीक्षण करने के लिए भृगु महर्षि को भेजा गया। वे क्रमशः सत्यलोक, कैलाश और वैकुण्ठ जाकर, वहाँ श्रीहरि के वक्षस्थल पर अपना पैर रखकर, फिर भगवान द्वारा सम्मानित होकर, इस धरती पर पहुँचकर, श्रीहरि ही सबसे श्रेष्ठ हैं कहकर, उन्हीं को यज्ञ फल समर्पित करवाया। इस कार्य से माँ लक्ष्मी और श्रीनारायण में पारस्परिक प्रेमकलह उत्पन्न हुआ। माँ लक्ष्मी का आगमन कोल्हापुरी में और श्रीमन्नारायण

का वेंकटाचल पर्वत पर हुआ। इस प्रकार वैकुण्ठ से भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का सीधा वेंकटाद्री पर पहुँचना, भृगुमहर्षि के कारण हुआ।

ये महर्षि ही विजयदास हैं। ऐसा उनके पुत्र मोहनदास के शब्दों से ज्ञात होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- 'महर्षिणाम भृगुरहम्।'

इनके पास भगवान का विभूतिरूप भी मौजूद है। त्रेतायुग एवं द्वापरयुग में सुरतिला, निकंपन के रूप में जन्म लेनेवाले से महर्षि, कलियुग में, पहले पुरंदरदास के घर गाय के बछडे के रूप में, जन्म लेकर, पोषित होने के बाद, उन्हीं दासश्रेष्ठ के चौथा पुत्र के रूप में जन्म लेकर, पिता के कीर्तनों का श्रवण करके, मध्यपति नाम से प्रसिद्ध हुए। अगले जन्म में पुरंदरदास की इच्छा से विजयदास के रूप में पैदा हुए थे। जन्म से ही गरीबी के कारण बिना खान-पान, वस्त्र के पीडित होकर काशी चले गए। वहाँ एक दिन विजयदास गंगा नदी के किनारे अकेले चाँदनी में बैठकर ध्यान करते समय, स्वयं श्री वेदव्यास, पुरंदरदास के रूप में आकर विजयदास को वहाँ से थोडे दूर ले जाकर, 'विजय विठ्ठला' नामक बीजाक्षर उनके जुबान पर लिख दिए। तब से वे 'विजयदास' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की और अनेक पद कविता सुलादी कीर्तन लिखें। श्री विजयदास जीवन भर, भारत देश के पुण्य तीर्थ क्षेत्रों का दर्शन करके, उन तीर्थों की महिमा तथा वहाँ के क्षेत्राधिपति देवताओं के बारे में कीर्तन सुलादियों में वर्णन किए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे हर साल बिना छोटे तिरुपति के ब्रह्मोत्सव में पधारकर, स्वामी की स्तुति करके, प्रभु की कृपा के पात्र बने। हरिदास बनकर, काशी से वापस विजयनगर (हम्पी) लौटने के बाद, एक रात उन्हें स्वप्न में श्रीवेंकटेश्वर स्वामी दर्शन देकर इस प्रकार आदेश दिया।

''एंदोडनाड्डुवे एंदर्दि बड्डुवे एंदिगे तर्कैसि संतोषपड्डुवे।।
उत्सहमंटपदोळगे कुळितुभक्तवत्सलनेंदु नुतिसि कोंबन।।''

श्रीविजयदास यह सोचते रहे कि कब भगवान का दर्शन करके, उनके सम्मुख खडे होकर, उनकी स्तुति कर पाऊँ और आनंद प्राप्त करूँ। ऐसे में एक रात स्वप्न में उन्होंने उत्सव मंडप में बैठे स्वामी का भक्तों द्वारा स्तुति करते देखकर अभिभूत हो गए। इतना ही नहीं भगवान श्रीनिवास समस्त अभूषणों से सुशोभित होकर, ब्रह्मादि रुद्रादि देवताओं, ऋषियों से स्तुति की जा रहे हैं। पुजारियों से ''आपोहिष्टामयोभुव'' नामक मंत्र सुन रहे हैं।

''सकल भूषितनागि अजहर सुरमुनि
निकर कैयिंदस्तुतिसि कोंबन कूडा
अपोहिष्टामयोभुव नेंबोमंत्र
आपुरोहित निंद कलितु कोंबनकूड।।''

ऐसे में श्रीविजयदास का उस मंडप में प्रवेश करते ही, स्वामी अपने अमृतमय दृष्टि की किरणे उन पर प्रसरित करके, हाथ के इशारे से पास बुलाकर इस प्रकार आदेश दिया -

''नाल्वत्तुमूरु पदंगळु माडेंदु
हेळिद हेमाद्रि शिखरा कारन कूडा।
दंडिगे करदल्लि कोट्टु अमृतकर
मंडि यल्लि इट्ट महामहिमन कूड।।''

अपने ऊपर तैंतालीस (43) पदों की रचना करना, ऐसा कहकर विजयदास के हाथ में तंबूरा रखकर, अपने अमृतमय हस्त उनके सिर पर रख दिए। उसके बाद पालकी में बैठकर मंदिर प्राकार की प्रदक्षिणा करके, फिर मंदिर में प्रवेश किए। (पल्लकि एरि पवळिस्तुति सर्रने निल्लदे गुडिपोक्क निर्मलनु) यह पूरी घटना घटी।

क्रमशः

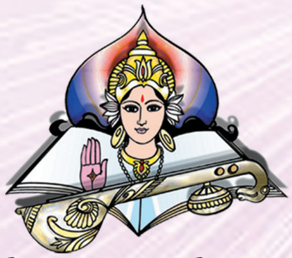

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - 9949872149

त्रयोदशः पाठः - तेरह पाठ

प्रयाणम् = यात्रा	दिवा = दिन	दौष्टयम् = पौरुषम्
तथाऽपि = यद्यपि	भिक्षाटनम् = भीख माँगना	सर्वथा = हर तरह से
अकुर्वन् = किया हैं, वे भूतकाल	अकुरुत = तुम सब किया बहुवचन (मःपु)	अकुर्म = किया था (भूतकाल लड़ हम)

प्रश्न : (अ)

1. त्वं ह्यः नक्तं कुत्र प्रयाणमकरोः?
2. बालकाः दौष्ट्यं कुर्वन्ति।
3. ते कुत्रापि नासन्।
4. तथाऽपि एते पाकं अकुर्वन्।
5. ब्राह्मणाः भिक्षाटनं कुर्वन्ति।
6. अद्य पाकः कथमस्ति?
7. अद्य व्यापारं वयमेव अकुर्म।
8. तथाऽपि ते केऽपि अत्र न सन्ति।
9. अद्य दिवा सर्वथा त्वं अत्र नासीः।
10. अद्य पाकं यूयमेव अकुरुत किम्?

जवाब : (अ)

1. आपने कल रात कहाँ बुनाई की थी?
2. लड़के दंगा कर रहे हैं।
3. वे कहीं नहीं मिलते।
4. यद्यपि उन्होंने खाना बनाया।
5. ब्राह्मण भीख मांग रहे हैं।
6. आज पक कैसा हैं?
7. आज हमने कारोबार खुद किया है।
8. हालांकि उनमें से कोई भी यहाँ नही है।
9. आप आज सुबह यहाँ बिल्कुल नही हैं।
10. आप जीविका केलिए क्या करते हैं।

प्रश्न : (आ)

1. कभी कहीं यात्रा नहीं की।
2. आपने क्या पकाया?
3. हम नहीं हैं, किसी और ने किया।
4. अन्य ब्राह्मण है।
5. वे कौन हैं?
6. फिर भी थे।
7. कल बच्चों ने दंगा किया।
8. क्या तुमने भीख मांगी?
9. स्वयं बनें।
10. मैं सलाम करता हूँ।

जवाब : (आ)

1. अहं कुत्रापि प्रयाणं न अकरवम्।
2. यूयमेव पाकं अकुरुत किम्?
3. वयं न, ये केऽपि अकुर्वन्।
4. अन्ये ब्राह्मणाः सन्ति।
5. ते के?
6. एते एव।
7. ह्यः बालकाः दौष्टयं अकुर्वन्।
8. त्वं भिक्षाटनमकरोः किम्?
9. त्वं एवं भव।
10. अहं नमस्कारं करोमि।

आयुर्वेद

आयुर्वेद में करेला का महत्व

- डॉ.सुमा जोषि, मोबाइल - 9449515046.

करेले का नाम सुनते ही सबको उसकी कडवाहट ही याद आती है। सामान्यतः इसे सब्जी की तरह प्रयोग में लाया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार, करेला मधुमेह के साथ-साथ कई और रोगों में भी लाभ पहुँचाता है।

सामान्य परिचय

लैटिन नाम :- Momordica charantia,

कुल / फैमिली :- Cucurbitaceae,

हिन्दी नाम :- करेला, कन्नडा :- हागलकायी

अंग्रेजी :- Bitter Gourd, Balsam Pear, Bitter Melon

तेलुगु :- काकरकाया

करेला भारत के समशीतोष्ण क्षेत्र में उगनेवाला एक आरोही लता है। इसकी खेती इसके सब्जी के उपयोग के लिए की जाती है। फूल पीले रंग के होते हैं और फल के बाहरी भाग में त्रिकोणीय लकीरें होती हैं।

गुणकर्म

रस - कडुवा, तीखा (थोडा-सा), गुण - हलका, रूखापन विपाक - तीखा, वीर्य - उष्ण, गुणकर्म - कफ और पित्त को कम करता, पाचन को बढ़ाता है। उपयुक्त भाग - पत्ते, फल

रोगकर्म - भोजन कुतुहलम के अनुसार यह प्रकृति में भेदक है, शक्ति में गर्म है, दोषों को खत्म करता है। शक्ति को बढावा देता है। और विष-विरोधी के रूप में काम करता है। यह प्रसक, डिस्पोनिया, खांसी, बवासीर, कृमि संक्रमण त्वचा रोग और बुखार का इलाज करता है।

रसायनिक सगंठन

फल में 5-हाइड्रॉक्सिट्रिप्टामाइन् चारेंटिन, डयोसजेनिन, लैनोस्टेरॉल और बीटासिटोस्टेरॉल होता है। इसमें कडुवे सिद्धान्त कुकुर्बिटासिन ग्लाइकोसाइड भी होते हैं। फल और बीज पॉलीपेप्टाइड इंसुलिन उत्पन्न करते हैं। जिन्हें पी-इंसुलिन, आल्फा और बीटा ग्लाइकोप्रोटीन कहा जाता है। बीज में हाइपोग्लाइसेमिक घटक विसिन भी होता है। एक अन्य प्रोटीन जिसे एम.आर.के-29 कहा जाता है, करेले की छोटी किस्म में पाया जाता है।

करेले का औषधीय प्रयोग

1) करेले के पत्ते के रस को सिर में लगाने से रूसी की समस्या खत्म होती है।

2) ज्यादा जोर से बोलने या चिल्लाने से अगर गला बैठ गया है और ध्वनि सही से नहीं निकल पा रही है तो 5 ग्राम करेला के जड के पेस्ट को मधु या 5 मिली ग्राम तुलसी के रस के साथ मिलाकर सेवन करें। इससे परेशानी दूर होती है।

3) अगर आप 5 ग्राम करेले के जड का पेस्ट बना लें। इसमें मधु या 5 एम.एल. तुलसी के रस मिला लें। इसका सेवन करें (दिन में एक बार)। इससे सांसों के रोग, जुकाम और कफ की बिमारी ठीक हो सकती है।

4) करेले के ताजें फलों या पत्तों को कूटकर रस निकाल लें। इसे गुनगुना करके 1-2 बूदँ कान में डालने से कान का दर्द ठीक होता है।

5) पेट में कीडे हैं, तो 10-12 मिली ग्राम करेला के पत्ते का रस पिलाए। इससे लाभ मिलता है।

6) इसी तरह 2-3 ग्राम करेले के बीजों को पीसकर सेवन करने से लाभ होता है।

7) बच्चों को दूध पिलानेवाली महिलाओं को करेले की 20 ग्राम पत्तों को पानी में उबाल लें। इसे छानकर पिए। इससे स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।

8) करेले के पत्ते के रस को दादवाले स्थान पर लगाने से दादा ठीक हो जाता है।

9) करेला के पौधे, दालचीनी, पीपर और चावल को जंगली बादाम के तेल में मिला लें। इसे लगाने से त्वचा विकार या चर्मरोग में फायदा होता है।

10) करेले का रस 15 एम.एल. + 2 ग्राम जीरे का चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पीने से वायरल फीवर में लाभदायी है।

11) करेले के पत्ते के रस को तलवे पर लगाने से तलवों की जलन में राहत मिलती है।

12) चेहरे या शरीर के अन्य अंगों पर फुन्सी हो गई है तो करेला के पत्ते के रस को फुंसी पर लगाएँ। इससे फुन्सी ठीक होती है।

13) करेला के फलों को सुखाकर महीन चूर्ण बना लें। इसे 1-6 ग्राम की मात्रा में जल या शहद के साथ सेवन करें। इससे मधुमेह में लाभ होता है। यह अग्नाशय को स्वस्थ बनाकर इंसुलिन के उत्पादन को सही करने में मदद पहुँचाता है।

14) ताजे करेले के फल के रस में अनेक पोषक तत्व होते हैं। इसकी 10-15 मिली ग्राम मात्रा पीने से भी मधुमेह में बहुत लाभ होता है।

15) इसके अलावा, 20 मिली ग्राम करेला के फल के रस में 20 मिली ग्राम आँवला के रस को मिला लें। इसे रोज सुबह-सुबह 4-6 माह तक नियमित रूप से सेवन करें। इससे मधुमेह में तुरंत लाभ होता है।

16) बवासीर से परेशान लोग, करेले की जड को घिसकर मस्सों पर लेप करें। इससे बवासीर में लाभ मिलता है।

17) इसी तरह 15-20 मिली ग्राम करेला के पत्ते के रस को 200-300 मिली लीटर छाछ के साथ रोजाना सुबह-सुबह सेवन करें। एक माह तक सेवन करने से बवासीर में फायदा होता है।

18) खूनी बवासरिवाले लोग 20-30 मिली लीटर करेले के काढ़े में चीनी मिला लें। इसे सुबह-शाम पीए। इससे खूनी बवासीर में लाभ होता है।

19) 10-15 मिली ग्राम करेला के पत्ते के रस में, बडी हरड को घिस लें। इसे पिलाने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

20) करेले के कच्चे हरे फलों के रस को गर्म कर लें। इसका लेप करने से गठिया में लाभ होता है।

21) आप करेले के फल को आग पर 10 मिनट रखकर भुर्ता बना लें। इसमें शक्कर मिलाकर रोगी को गुनगुना कर खिला दें। इसे करीब 125 मिली ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम रोगी को गर्म-गर्म खिलाएँ। इससे गठिया में आराम होता है। पीडा वाले स्थान पर फलों के रस का बार-बार लेप करने से भी गठिया में आराम होता है।

22) करेला के पत्ते के पेस्ट बना लें। इसे आंखो के चारों तरफ लेप करने से रात के अंधेपन की समस्या में लाभ होता है।

करेले का प्रयोग किसे नहीं करना चाहिए?

1) लो ब्लडशुगर लेवल से पीडित रोगियों एवं बच्चों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए। 2) करेले के बीज से गर्भपात होने की सम्भावना होती है। इसीलिए गर्भवती महिलायें इसका प्रयोग न करें।

करेले का साइड इफेक्ट

बहुत अधिक मात्रा में करेले का सेवन करने से पेट में दर्द और दस्त की समस्या हो सकती है। अगर ऐसी परेशानी हो रही हो तो चावल और घी से मिला कर उसे खाना चाहिए। यह पूरा विवरण ज्ञान मात्र के लिए दिया गया है। एक आयुर्वेद के वैद्य की सलाह पर इस का उपयोग करना ही उचित है।

नीतिकथा

हरिकथा का महत्व

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

गंगा के किनारे से चार मील की दूरी पर अभयनगर नाम का एक छोटा सा गाँव था। वहाँ अमृतसेन नामक एक किसान रहता था। उसी गाँव में आत्मानंद नामक एक महान तपस्वी भी रहते थे। वे रोज शाम को भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं को हरिकथा के रूप में गाँव के लोगों को सुनाते थे। किसान अमृतसेन रोज शाम को अपना सारा काम पूरा करके उस कथा को सुनने के लिए आ जाता था। अब उसकी उम्र अस्सी है। इतनी उम्र में भी वह हरिकथा सुनाये बिना घर नहीं लौटता था। उसका गाँव गंगा के निकट होने पर भी वह अब तक गंगा में स्नान करने नहीं गया था।

एक बार दो यात्री गंगा में स्नान करने के विचार से बहुत दूर से पैदल आ रहे थे। रात हो गयी थी। इसलिए वे उस रात कहीं ठहरकर अपनी यात्रा जारी रखना चाहते थे। तब उन दोनों ने समीप में हुए किसान अमृतसेन की झोंपडी को देखा और वहाँ जाकर उस दिन रात ठहरने को स्थान माँगा। किसान ने गंगा में स्नान करने आये उनको बडे आदर के साथ अपने घर के अन्दर ले गया और अपनी पत्नी को उनका परिचय कराया। उसकी पत्नी उनको खाने के लिए भोजन तैयार करने लगी।

उन दोनों ने किसान से पूछा कि गंगा यहाँ से कितनी दूर पर है? जवाब में किसान ने कहा, ‘‘मैंने सुना है कि नदी यहाँ से चार मील की दूरी पर है। लेकिन मैंने गंगा में कभी स्नान नहीं किया है। पर मैं रोज शाम को तपस्वी आत्मानंद की हरिकथा सुने बिना नींद नहीं करता।’’ उसका यह जवाब सुनकर दोनों यात्रियों को बडा आश्चर्य हुआ। फिर वे सोचने लगे कि हजारों मील दूर पार करके रहने पर भी गंगा का नाम याद करने मात्र से हमारे सारे पाप मिट जाते हैं। यह तो पवित्र नदी गंगा के निकट रहता है, पर उस नदी का आदर नहीं करता है।

ऐसे आदमी के घर में ठहरना और भोजन लेना बडा पाप है। इतना सोचकर वे दोनों भोजन लिए बिना वहाँ से निकल गये। उनके व्यवहार से किसान को बडा दुख हुआ। वे दोनों आखिर गंगा नदी के पास आ पहुँचे। पर आश्चर्य! वहाँ नदी सूखी पडी थी और कहीं एक बूँद का पानी भी दीख नहीं पडता था। हर कहीं रेत ही देखने को मिलता था।

यह देखकर उनको बडा धक्का लगा। उनको अपने दुर्भाग्य पर बडी वेदना हुई। उन्होंने सोचा कि हमारे कोई अपराध के कारण ही ऐसा हुआ है। उसके बाद

उन दोनों ने गंगा माता की प्रार्थना करके पूछा कि माता हमारा ऐसा अपराध क्या है?

उनकी प्रार्थना के बाद आकाश से एक आवाज सुन पडी, ''आप लोगों ने मेरा दर्शन पाने का भाग्य खो दिया है। आप लोगों ने किसान अमृतसेन का अपमान करके बडा पाप कर दिया है। क्योंकि जहाँ हरिकथा होती है वहाँ पवित्र नदियों का संगम होता है। जो हरिकथा को लगातार सुनते हैं वे पवित्रवान बन जाते हैं। ऐसे पवित्रवान के चरणों को छूना ही मैं अपना बडा भाग्य मानती हूँ। इसलिए उस पवित्रवान किसान के प्रति आपने जो किया है वह बडा पाप है।''

अपनी गलती समझकर उन दोनों ने किसान अमृतसेन से मिलकर क्षमा याचना की। किसान ने बडे दिल से उन दोनों को गले लगा लिया। वह उन दोनों को आत्मानंद की हरिकथा सुनने के लिए ले गया। उसके बाद उन दोनों को गंगा में स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मतलब यह है कि गंगा में स्नान करने से पवित्रवान बन सकते हैं। पर सब के लिए वह मौका मिलना कठिन है। लेकिन हरिकथा सुनना और पढना आसान है और जो ऐसा करते हैं वे अपने स्थान में ही रहकर पवित्रवान बन जाते हैं।

नीति पद्यम्

5

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

कफमु मीरि मरियु गनुलु मूतलु वडि
बुद्धि तप्पि चाल बुडमि मरचु
वेळलंदु निन्नु वेदकुट साध्यमा?
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ॥५॥

हे भगवान, बुढापे में जब वात, पित्त एवं कफ का प्रकोप बढ़ जाता है, चित्त अपना स्थैर्य खो बैठता है, नेत्रों की ज्योति क्षीण हो जाती है, मृत्यु समीप आ जाती है, किस प्रकार मूर्ख मानव तुम्हारा अन्वेषण कर सकता है?

चित्रकथा

सुप्रसिद्ध गायक त्यागराजस्वामी

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन्
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

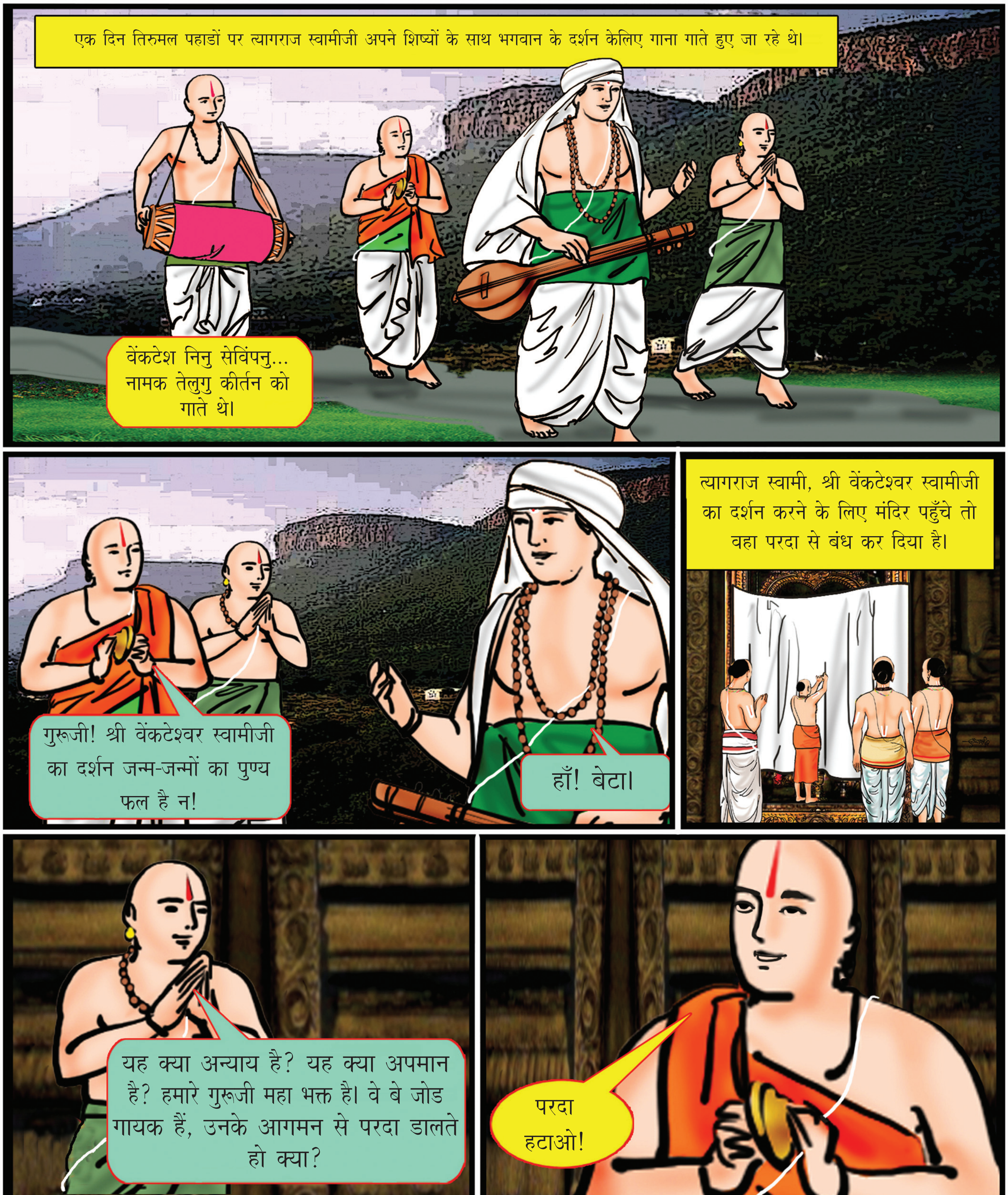

बेटा! गणपति! मंदिर की मर्यादा और पूजा संप्रदायों के बारे में आलोचना करना धर्म नहीं है। भगवान की पूजा रोक कर परदा हटाने का साहस इस धरती पर किसी को नहीं है।
उस परदा की भाँति हमारे मन में भी गहरे परदे बहुत है। भगवान से मन के परदों को मिटाने केलिए प्रार्थना करेंगे।
तेरा तीयगा रादा... (परदा हटाने आओ स्वामी!) नामक तेलुगु कीर्तन को गायन किया।
त्यागय्याजी के गानामृत से श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी के सामने का परदा नीचे गिर गया (हट गया)... वहाँ के सभी पूजारी इस दृश्य को देखकर अचरज में पड गये।
अद्‌भुत है नाद ब्रह्म! आप ने, अपने अपूर्व गाने की प्रतिभा से परदा को हटाया। अद्भुत है! आप अपने गाने से श्रीहरि को प्रसन्न किया।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु!

'क्विज'

आयोजक - डॉ.एन.दिव्या

१) पाण्डवों का जन्म स्थान कौन सा है?

अ) हस्तिना   आ) कुरुक्षेत्र   इ) शतश्रुँग   ई) हिमालय

२) अर्जुन का जन्म नक्षत्र कौन सा है?

अ) श्रवण   आ) उत्तरफल्गुनी   इ) रेवती   ई) स्वाती

३) गोदादेवी ने किस भगवान से शादी की?

अ) श्रीरंगनाथ   आ) महाविष्णु   इ) बालाजी   ई) ईश्वर

४) सीता रामलक्ष्मण जंगल में किस पर्णशाला में थे?

अ) सप्तवटी   आ) पंचवटी   इ) त्रिवटी   ई) अष्टवटी

५) जटायु ने रावण के धनुष को किससे तोडा?

अ) पंख   आ) पैर   इ) नाक   ई) नाखून

६) संक्रांति के दिन सूर्य भगवान किस राशी में प्रवेश करते हैं?

अ) कर्काटक   आ) सिंह   इ) मीन   ई) मकर

७) श्री वेंकटेश्वर सप्त गोप्रदक्षिण मंदिर का निर्माण कहाँ हुआ?

अ) कपिलतीर्थ   आ) अप्पलायगुंटा   इ) अलिपिरि   ई) श्रीनिवासमंगापुरम्

जवाब

१) इ २) आ ३) अ ४) आ ५) इ ६) ई ७) इ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

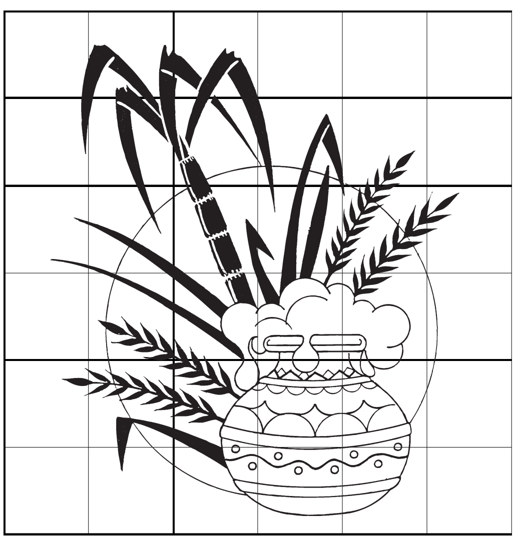

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

२०२१, नवबंर
२५ से २९ तक
तिरुमल में संपन्न
श्री वराहस्वामीजी का
आलय जीर्णोद्धरण,
अष्ट बंधन,
महासंप्रोक्षण के
छाया-चित्र।

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-12-2021 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.